अब्दुल्ला दीवाना

डा० लक्ष्मीनारायण लाल का
बहुचर्चित रंग-नाटक

अब्दुल्ला दीवाना

अब्दुल्ला दीवाना

लक्ष्मीनारायण लाल

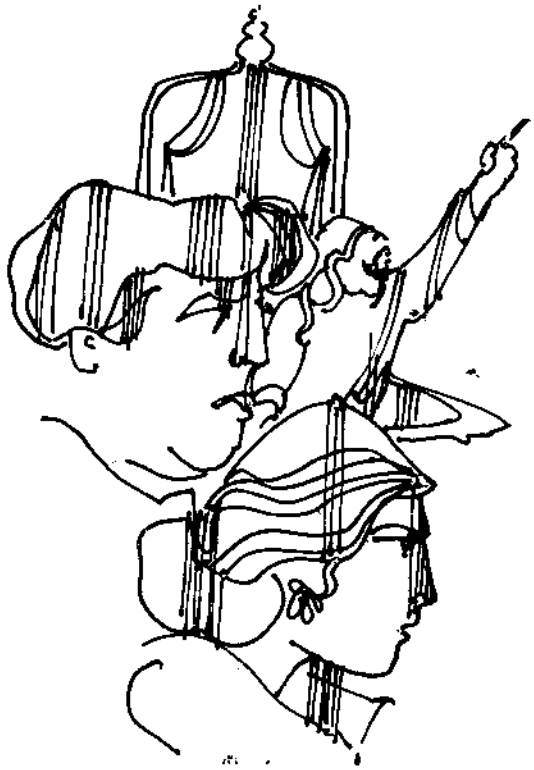

निधि प्रकाशन

1, अंसारी रोड़, नई दिल्ली-2

इस नाटक के अभिनय-प्रदर्शन, नाट्य-पाठ, अनुवाद, प्रसारण तथा फिल्मीकरण आदि के लिए इसके लेखक की लिखित पूर्वअनुमति अनिवार्य है। पत्र-व्यवहार का पता :
डा० लक्ष्मीनारायण लाल, 54-ए, एम० आई० जी० फ्लैट्स,
ए-2, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063

मूल्य : रु० 18.00

'लिपि' से पहली बार : 1984
© डा० लक्ष्मीनारायण लाल

प्रकाशक
लिपि प्रकाशन
1, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली-32

ABDULLA DIWANA ☐ Dr. Lakshmi Narain Lal ☐ Play

अब्दुल्ला दीवाना

नाटक के निर्देशन के दौरान

जीवन में चुनौती के कई रूप होते हैं। कई स्तरों पर अपने परिवेश को स्वीकार करना, जीवन की सार्थकता का पर्याय मानता हूं। गत पन्द्रह वर्षों में, विभिन्न भूमिकाओं के स्तर पर मैं उन चुनौतियों को स्वीकारता चला आया हूं।

पर 'अब्दुल्ला' की चुनौती एक अजब चुनौती थी, अभूतपूर्व। रंगमंच से जुड़ा हुआ कलाकार, उसकी ईमानदारी और ऐसे निश्छल, सच्चे नाटक का अर्थ—जिसके संदर्भ व्यापक हैं—सब का आमना-सामना कोई आसान बात तो नहीं।

इस नाटक को पढ़कर, सुनकर, न जाने कितनी बार फिर पढ़कर और अपनी बंद आंखों के भीतर इसे देखकर मुझे लगा—इस नाटक के चरित्र खुद ही मुकदमे की पैरवी कर रहे हैं। अभिनेता गवाह हैं। दर्शक अभियोगी हैं।

इसके निर्देशन क्या, इसकी तलाश के दौरान मैंने इस बात को और भी गहराई से महसूस किया है कि दरअस्ल हमने अब्दुल्ला की हत्या की है। यह हत्या किसी एक व्यक्ति की हत्या नहीं, बल्कि उसके जीवन-मूल्यों की हत्या है। व्यक्ति तो अपने भौतिक स्तर पर खूब फला-फूला है, पर उसकी धुरी का उच्छेदन हो गया है। और सबसे बड़ा मज़ाक यह कि यह हत्या, यह उच्छेदन किया है उन्होंने, जो किसी नई धुरी के निर्माण में सर्वथा असमर्थ हैं। अब्दुल्ला-विहीन समाज और काल को इतने निकट से देखना और उसे भोगना, फिर उसका प्रहसन करना कोई आसान चुनौती नहीं। और

अंत में उन शक्तियों का परिचय पाना, जो अब्दुल्ला की हत्या के लिए उत्तरदायी हैं—यह एक ऐसी अनुभूति है, जो न जाने कब तक परेशान करने वाली है।

यदि मैं अतिरंजित बात नहीं कह रहा, तो स्वीकार करना होगा कि आज हमारे समूचे जीवन वृत्त को राजनीति के चारों ओर असहाय घूमना पड़ रहा है। इस निरर्थक चक्कर से क्षुब्ध तब होना पड़ता है, जब हर ओर निराशा, हताशा और एक व्यापक अंधकार में भटकती पराजित मनोवृत्ति ही चारों ओर दिखलाई पड़ती है। अनिश्चय और असुरक्षा हमारे अकिंचन स्वरूप को और भी खंडित कर देती है। और यदि हम इसके खिलाफ कुछ कहते भी हैं तो प्रतीत होता है कि उस विरोध का असर और महत्ता कुत्ते के भौंकने के स्वर से भी कम है।

इस हालत में सिर्फ दो स्थितियां हमारे सामने हैं, हमारे चारों ओर हैं—एक, राजनेताओं के खोखले नारे, दूसरे, अंधविश्वास में से पनपता हुआ नया चमत्कारपूर्ण धर्म और नव-ईश्वरवाद।

'अब्दुल्ला दीवाना' में यही तस्वीर शुद्ध अभिधा में व्यक्त है। अब्दुल्ला को मारकर नया उच्चवर्ग आया है। उसी वर्ग का खोखलापन, नंगापन और सत्ता तथा व्यवस्था से चंदे के एवज़ में इस नये वर्ग को जो ताकत, स्वरूप, हैसियत मिली है, वही इस नाटक में व्यक्त है।

यह सब कुछ जितना ही हास्यास्पद है, उतना ही करुण है।

मैंने अनुभव किया कि लाल ने अपने इस नाटक में समस्या नहीं उठाई है, बल्कि वे सीधे प्रश्न से ही जूझे हैं।

उनका आग्रह प्रश्न की कलात्मकता के प्रति उतना नहीं है, जितना अपने कृतित्व के दायित्व के प्रति सचेत रहने का है। इस नाटक पर कहीं से भी, किसी तरह से भी, पूर्णता या महानता का आरोपण नहीं है। शायद तभी ही यह स्थूल किंतु सच्ची, खरी और अपेक्षित बात कहने से कहीं कतराया नहीं है।

मुकदमा चल रहा है कि उस अब्दुल्ला की हत्या किसने की? जिनपर इस हत्या का आरोप है—वे कोई साधारण आदमी नहीं हैं। वे बड़े ही ताकतवर लोग हैं। बड़ी ही पहुंच के लोग हैं। बड़े ही धर्मात्मा लोग। वे कुछ भी बोल सकते हैं, कुछ भी कर सकते हैं।

पर वे कहीं-न-कहीं अब्दुल्ला के संपर्क में कभी ज़रूर आए हैं। बहस के दौरान जब प्रत्येक व्यक्ति बयान देता हुआ अंतर्मुख हो जाता है, तो हर कोई स्वीकार करता है कि उसने अब्दुल्ला को देखा है। प्रत्येक बार जब-जब कोई व्यक्ति पथभ्रष्ट होने लगा था, तब-तब वह अदृश्य, अमूर्त दीवाना अब्दुल्ला प्रकट होकर उसकी चेतना को झकझोरता है। पर जब असत्य विजयी हो जाता है तो उसे लगता है कि शायद उसके बाद अब्दुल्ला मर गया। तब लगता है अब्दुल्ला और कोई नहीं, व्यक्ति के भीतर का एक अत्यंत मानवीय सत्य है, जो अलग-अलग व्यक्तियों में परिस्थिति के अनुसार जी उठता है। कभी शिकार करते समय व्यक्ति के आड़े आ जाता है, कभी हत्यारे के सामने खड़ा हो जाता है। कभी लूटते हुए व्यक्ति से पूछ बैठता है—'मनुष्य अर्थ का दास है, पर अर्थ किसका दास है?'

पर इस हत्या से बचने के अनेक उपाय हैं।

सम्मानित, मर्यादित और निर्दोष बने रहने के भी

अनेक साधन और तौर-तरीके हैं।

उन साधनों की ड्रिल, पागलपन, चरित्रांकन, प्रहसन, अदृश्य चरित्रों की भीड़, सूक्ष्म दैवी सत्संग चित्र,···नाटक इतना गैर-ज़िम्मेदार लगता है कि इसे पकड़ना मुश्किल हो जाता है।

लोक रंगमंच की तरह इसके चरित्र एकाएक अभिनेता हो जाते है, एकाएक दर्शक और समान रूप से कहीं यथार्थ भोक्ता और रंग-नियामक।

—श्याम अरोड़ा

नाटक देखने के बाद

हिन्दी लेखक को अब काफी समय से अपने वातावरण की वास्तविकता का अपरिचय ही नहीं रहा है, अपने बारे में बहुत-से भुलावे भी रहे हैं। परिवर्तन को न पहचानते हुए भी वह अपनी असलियत के खाने को पहचानता है। इसीलिए वह अपनी परम्परा से सार्थक और जीवन्त रूप में जुड़ भी नहीं पाता। उसके पास पैर जमाने ने लिए कोई ज़मीन नहीं दिखती।

उन्नीसवीं शताब्दी से भारत ने अपने बारे में एक आध्यात्मिक देश की छवि बना ली है। सैकड़ों वर्ष अकेले रहने के बाद हम दुनिया के सम्पर्क में, चाहे जबरन ही, पर आए। तब इतिहास में पहली बार इस देश को शेष दुनिया के आगे सफाई पेश करनी पड़ी—मैं कौन हूं और क्या हूं? तभी से भारत ने अपने बारे में यह धारणा बनाई है कि उसका असली रूप तो अध्यात्मवादी है; शेष जीवन उनके लिए इतने महत्त्व का नहीं। इसीलिए भौतिक रूप से गरीब और टूटा हुआ होने पर भी वह भौतिकवादी पश्चिम से कहीं ऊंचा है। वास्तव में वह तो विश्व का गुरु है। यह आत्म-वंचना हमारे अपने बारे में हर विचार को आक्रान्त किए है; इसी में समाज का भुलावा है, इसी में यहां के कलाकार की विचित्र स्थिति छिपी है।

उन्नीसवीं शताब्दी से आज़ादी मिलने तक इस आत्मवंचना के राजनैतिक और सामाजिक लाभ थे। टूटे और बिखरे हुए देश को एक सूत्र में बांधने के लिए उसे एक पहचान देने की आवश्यकता थी। यह पहचान वर्तमान को वास्तविकता से तो मिल नहीं सकती थी, इसीलिए उसे अतीत के आधार पर गढ़ा गया। अतीत के आदर्श सुन्दर और प्रेरक होते हैं। अतीत की दुःखद सच्चाइयों का रिकार्ड कम होता है और उसे आसानी से झुठलाया जा सकता है।

द्विवेदी युग का काव्य, बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट की तरह पारम्परिक हिन्दू दर्शन और पुण्य गाथा का पुनर्स्थापन था। कलाकार की जीवन-दृष्टि भी पारम्परिक थी। बदली थी केवल उसकी भाषा और उसका लहजा। संस्कृति का आधार पारम्परिक मूल्यों को ही माना गया है। मैथिलीशरण गुप्त ने उर्मिला के विरह को पुराने कवियों द्वारा उपेक्षित मानकर राम की कथा का विस्तार करने की ही कोशिश की है। पर वह यह नहीं समझते कि प्राचीन कवि या पारम्परिक कवि क्यों उस विषय को नहीं पकड़ रहा है।

दरअसल, यहीं से प्राचीन युग-दृष्टि के साथ आधुनिक मूल्यों का विरोध शुरू हो जाता है।

बुद्ध को घर छोड़ने के बाद यशोधरा की उपासना की आवश्यकता नहीं थी। उनकी बला से, यशोधरा पुनर्विवाह करती, या कुछ और करती। वह संसार और उसके सम्बन्धों को निर्मम होकर छोड़ गए थे। यह निर्ममता उनकी साधना के लिए ज़रूरी थी। प्राचीन कवि आत्म-खोज और उसके अलौकिक वैभव की यात्रा को शुद्ध-सच्चा रखना चाहता है। वहां विषय है आत्मा की तलाश। यशोधरा के प्रति प्रेम का बना रहना या मिट जाना बुद्ध की तलाश और सिद्धि की सहायता नहीं कर सकते। घर पर विश्वासपूर्वक प्रेमिका का इन्तज़ार योद्धा को रण में प्रेरित कर सकता है, पर पत्नी (पूर्व पत्नी) का इन्तज़ार योगी के लिए उसकी यात्रा में कोई स्थान नहीं रखता। उसकी खोज नितांत अपनी है, उसकी लौ दृष्टि में लगी है। मैथिलीशरशण के काव्य को पढ़कर तो लगता है कि यशोधरा का पातिव्रत बुद्ध की सहायता कर रहा है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में यहीं से रोमैन्टीकरण चल रहा है। उल्टा होकर वह यथार्थवाद बन जाता है। स्पष्ट विचार नहीं है,

भावना का पूरा आवेग है। कभी-कभी बेहतर कवियों की कुछ रचनाओं में सुव्यवस्थित विचार के आ जाने पर, या चिंतन से बने प्रतीकों के सहारे, भावप्रवणता से श्रेष्ठ काव्य बन जाता है; परन्तु अधिकतर यह भावुकता, छायावाद में धुन धुन, फुन फुन, झिलमिल करती रही, प्रगतिवाद में इतने शांय-शांय धांय-धांय की, और अब प्रयोगवाद काल में, उई मां सीसी, रेरें, फिसफिस और ट्यूं-ट्यूं भी कर रही है।

कमज़ोर विचारशीलता के कारण कवि यहां की बुनियादी असलियत से अनभिज्ञ रहा है और समाज निश्चेष्ट और मरियल। हिन्दी साहित्य में नारी-वन्दना होती रही पर स्त्री का जीवन पुराने बन्धनों से मुक्त नहीं हुआ। वह आज भी गहनों की दास है, भोग-प्रसाधन है, और मां-बाप, पति और फिर पुत्र के कहने पर चलने वाली है। काव्य में इसे कितने ही गुणों की खान बताया गया हो पर व्यवहार में निरीहता ही उसका सबसे बड़ा आभूषण माना जाता है। इसीलिए पुनरावलोकन में हिन्दी साहित्य का नारी-गौरव छिछला और महज भावुक लगता है। उसमें संघर्ष से उत्पन्न नये अस्तित्व को प्राप्त करने के संकल्प का अभाव है। एक क्षीण स्वप्न है जो साकार करने की हिम्मत और क्षमता न होने के कारण धुल गया। यही हाल साम्यवाद और समाजवाद का हुआ। हम कोई दर्शन या विचार पद्धति महज इम्पोर्ट कर लेते हैं, या अपने अतीत का रोमैन्टीकरण कर लेते हैं—जीवन में उस विचार को लेकर कोई संघर्ष और परिवर्तन नहीं करते। न धारणा है न संयोजित कर्म है, तभी विचारने की शक्ति का क्षय है। विचार का उद्भव जीवन में प्रयोग से होता है, आयातित दर्शन या अपने ही देश के अतीत दर्शन को अपनाने से नहीं हो सकता। यहां का समाज न सोचने वाला, झिझका हुआ, भीरु और 'स्वप्निल' है। हिन्दी का वर्तमान लेखक इसी सच्चाई की उपज है।

सन् 84 में लेखक का कर्त्तव्य अपने पूर्वजों से भिन्न हो गया है। अभी तक लेखक किसी-न-किसी रूप में राजनीतिज्ञ का चारण

था। पर 37 वर्ष की स्वतन्त्रता यह साबित कर चुकी है कि यह राजनीतिज्ञ पाखण्डी है, चोर है। अब चारण को गाना बन्द कर मूर्तियों का खण्डन करना है और जनता का मोह भंग करना है। लाल के 'अब्दुल्ला दीवाना' का महत्त्व यही मोह भंग करने और भुलावों से छुटकारा दिलाने की क्षमता में है। राजनैतिक पाखण्ड, धार्मिक पाखण्ड, जनतन्त्र और समाजवाद का पाखण्ड व न्याय का पाखण्ड—सभी पाखण्ड यहां स्पष्ट और निर्भीक लहजे में तोड़ दिए गए हैं। यहां लेखक चारण नहीं है।

नाटक में न्यायाधीश का बोलते-बोलते गिर जाना कानून की निस्सारता दिखाता है और फिर उसका खड़े होकर 'कमिटेड' जज का पट्टा पहनना न्याय का अन्त।

लाल का यह नाटक 28 फरवरी और 1 मार्च, 1973 को दिल्ली में 'अभियान' द्वारा श्याम अरोड़ा के निर्देशन में खेला गया। नाटक को राजनीतिक स्तर पर आपत्तिजनक कहकर दिल्ली प्रशासन द्वारा मनोरंजन कर की छूट नहीं दी गई लेकिन कलाकारों ने आस्थापूर्वक इसको खेलकर जनता के सामने रख ही दिया। प्रशासन के अधिकारियों को नाटक पर कुछ राजनैतिक आपत्तियां थीं। स्पष्ट है, यहां लेखक सरकार का चारण नहीं है, उसके पाखण्ड को प्रकट करने वाला है। दिल्ली प्रशासन का कर से छूट न देना एक प्रकार का परोक्ष प्रतिबंध है लेकिन इस नाटक का महत्त्व सरकार द्वारा रोक लगाने से सिद्ध नहीं होता। यहां एक बुनियादी सवाल उठाया गया है, वही इसे महत्त्वपूर्ण बनाता है। आज़ादी मिलने के समय से अब तक हमने क्या किया है और इसका नतीजा क्या होगा? इस देश की चेतना (अब्दुल्ला) किस प्रकार मर रही है, बदल रही है? लाल चाहते हैं कि हम इस सत्य को खोजें, पहचानें और स्वीकार करें। अपने निरीक्षण में लेखक निर्भीक और मुंहतोड़ हो गया है। उसका कहना है कि हमारे जीवन में कहीं कुछ मर गया है—किसी महत् मूल्य की हत्या हो गई

है। उसी मूल्य को 'अब्दुल्ला' कहा गया है। कौन था यह अब्दुल्ला? वह कहां रहता था और किसने या किन्होंने इसे मार दिया? हम यही जानने के लिए न्यायालय जाते हैं, और यह भी जानने के लिए कि हमें हो क्या गया है। यहां नाट्यकार का प्रमुख अभिप्राय सामाजिक चेतना जगाना है, न कि एक भाव-प्रधान, कथाप्रधान नाटक से मनोरंजन करना। उसका ध्येय चैतन्य देना है, रस चखवाना नहीं। वह अपने इस कार्य में निर्भीक और निर्मम है क्योंकि सामाजिक चेतना रसास्वादन से ज्यादा मायने रखती है।

हमारे जीवन में जो अर्थहीनता, कायरता, भावुकता आ गई हैं, लाल उसकी जड़ तक गए हैं। दिखाने के लिए आदर्शवाद, अध्यात्मवाद, पर व्यवहार में अवसरवाद—यही है व्याधि की जड़। जो इसको नहीं समझते, उनका जीवन करुणा का विषय है और जो यह जानते हैं उनके लिए यह समझ जनता को शोषित करने का साधन है। लेकिन शोषक थोड़े-से हैं, अधिक जनता ही भुलावों की शिकार है। देश की आत्मा इसी प्रक्रिया में मर रही है, वही अब्दुल्ला की मौत है। न्याय, आशा और ईमानदारी मर चुकी है, वेझिझिक अवसरवाद ही देखने को मिलता है। पुराने अब्दुल्ला के मरने के बाद नये अवसरवाद में नया अब्दुल्ला जन्म ले रहा है।

अब हमने अपनी सारी समस्याओं की जड़ गरीबी को ही मान लिया है। पहले हमारी सब समस्याओं की जड़ गुलामी थी। जैसे गरीबी के हटते ही जीवन खुद-ब-खुद ही स्थायी सुख से पूर्ण हो जाएगा। अब्दुल्ला का कृतिकार स्पष्ट कर रहा है कि यहां कोई गरीबी हटाना नहीं चाहता। किसी को भी, और विशेषकर राजनीतिज्ञ को, गरीबी की परवाह नहीं है। राजनीतिज्ञ, अफसर, पुलिस और जनता सिर्फ अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे हैं। सब आदर्श और लम्बी लड़ाइयां भुलाई जा चुकी हैं। तत्काल स्वार्थ-सिद्धि और अधिकार के अतिरिक्त किसीका कोई ध्येय नहीं है। नाटक वेझिझक होकर यह खोल देता है कि किस तरह छोटी पूंजी बड़ी की जा रही है, किन अनैतिक तरीकों से पूंजी के इस विस्तार

में राजनीतिज्ञ और पुलिस शामिल हैं। ब्रिटिश राज के एकाधिकार को पूंजीपति और राजनीतिज्ञ के संयुक्त वर्ग ने प्राप्त कर जनता को नारे और भुलावों द्वारा अज्ञान और दारिद्र्य में रखा है। समाजवाद, गरीबी हटाओ, प्रजातांत्रिक समानाधिकार तथा न्याय उसी प्रकार के ढोंग और स्वार्थ-सिद्धि के-साधन हैं जैसे भारतीय अध्यात्मवाद का प्रचार भी निश्चेष्टता और मरियलपन, रूढ़ि, धर्मान्धता और कठमुल्लेपन को छुपाने का मुखौटा है।

जो नारी-वन्दना साहित्य में खत्म हो गई, वह अभी भी भारतीय फिल्मों में जारी है। मां की ममता, पत्नी का पातिव्रत्य और बहन के प्रेम पर चालीससाला आंसू बहाकर भी सिनेमा-दर्शकों की आंखें अभी सूखी नहीं हैं। लेकिन लाल यहां वास्तविकता का परिचय देना चाहते हैं। यह तथाकथित बलिदान करने वाली भारतीय नारी भीतर-ही-भीतर पशु-प्रेमी होती जा रही है। उसे अवसरवादी पुरुष चाहिए। वह पुरुष, जो समाज में जैसे-तैसे भी अपना उल्लू सीधाकर सफल बन बैठा है। उसने कैसे सफलता प्राप्त की और उसे बनाए रखने के लिए वह क्या-क्या करता रहेगा, यह सब यह देवी क्षमा कर देती है। जैसे सीता ने राम को किया और शकुन्तला ने दुष्यन्त को, तथा इस देश की कितनी ही अनगिनत अन्य वीरांगनाओं ने। आज की इस नारी का अवसरवादी को समर्पण अपने अवसर को खोलने का द्वार है। यह कैसा मजाक है!

अब्दुल्ला की हत्या में युवा वर्ग का भी उतना ही हाथ है जितना अवसरवादी 'पुरुष' और सत्तालोलुप राजनीतिज्ञ का। अवसरवाद से भिन्न उनकी कोई दिशा नहीं है। ऊपर से कितना ही शोर-शराबा वे मचाते हों, फैशन में विदेशी युवकों के समान दिखते हों, लेकिन जीवन में उनकी अपनी कोई प्रेरणा या दृष्टि नहीं। ऊपरी लिबास और लहजा उस समय उतर जाता है, जब मां-बाप नकेल डालकर समाज के कोल्हू में उन्हें लगा देते हैं। उनका विद्रोह दिखावटी है, इस नाटक के युवक की तरह जिसके बाल समय आने पर सिर से अलग हो जाते हैं। यहां का समाज

हिप्पी पैदा करने की क्षमता नहीं रखता। युवा वर्ग स्त्रियों की तरह ही है—अपने निर्णय स्वयं करने में असमर्थ। स्त्रियों को सुन्दर और सुशील रहना है जिससे उन्हें शोभा बढ़ाने के लिए, घर बनाने के लिए खरीदा जा सके, और युवकों को उद्दण्डता, विद्रोह का नाटक करना है जिससे उन्हें 'आधुनिक' की संज्ञा मिलती रहे और एवज में उनसे कुछ भी कराया जा सके। न्याय एक नाटक मात्र रह गया है। इसीलिए नाटक में इसका यथोचित स्थान है। सत्ताधारी सरकार धीरे-धीरे किन परोक्ष तरीकों से न्यायपालिका पर संसद् और पार्टी के बहुमत से ज़ोर डाल रही है। इसका आभास जनता को कम है पर आगे चलकर पूरा-पूरा हो जाएगा। पैसे वाला और सामाजिक ज़ोर-जबर रखने वाला व्यक्ति न्याय खरीद सकता है। अवसरवाद से कोई मुक्त नहीं है। सामाजिक अवस्था में पैसे और अनैतिक दबाव से कानून झुठलाया जा सकता है।

सबसे अधिक खोने वाला आम आदमी है। अंग्रेज़ों से जिस वर्ग ने सत्ता पाई, वह आज़ादी काले ने गोरे से पाई, और वही फायदे में है। आम आदमी की आवाज़ मात्र वोट देना रह गई है जिसमें कोई शक्ति नहीं है। वह व्यक्ति से वोट होकर रह गया है। सत्ताधारियों के निर्णयों को, न्याय के निष्पक्ष न होने पर वह कहीं ललकार भी नहीं सकता—इसीलिए यह कैसी आज़ादी है, 'जहां नहीं चल सकता आम आदमी का मन्त्र।'

आम आदमी के अधिकार वास्तव में नहीं रहे तो उसकी आत्मा भी नहीं रही। सत्तारूढ़ वर्ग का अवसरवाद अब उसका आचरण हो गया है। भारत के लिए तो हमेशा से, यथा राजा तथा प्रजा।

लाल इस नाटक में हिन्दी के सामान्य कथासूत्र और चरित्रों वाले नाटकों से हटकर अलग दिशा में आ गए हैं। यहां नाटककार का अभिप्राय किसी एक समस्या को लेकर उसका समाधान करना नहीं—मानो मंच कोई विचार-गोष्ठी का विस्तार हो। शायद इसी कारण दिल्ली का रोमान्टिक आरामतलब रंग-समीक्षक इस नाटक का यह नया ढंग नहीं पकड़ पाया। इस वर्ग में स्वयं पर हंसने का साहस कहां है? यहां समाज की कई समस्याओं को रखा गया है—जैसे रामलीला में जीवन के सभी आधार और विचार धार्मिक चेतना का अंग बनकर आते हैं, वैसे ही यहां हमारे समूचे जीवन से सम्बन्धित सवाल उठाए जा रहे हैं। इसीलिए यहां विशिष्ट व्यक्तित्व वाले पात्र नहीं हैं—समाज के मुख्य वर्गों के प्रतिनिधि पात्र हैं। हां—तभी तो चरित्रों के कोई नाम नहीं हैं।

नाटक का सारा विस्तार इनके बीच होने वाले संवाद में ही है जो कि न्यूनतम घटना-सूत्र पर जुड़ा हुआ है। यहां सारे चरित्र एक-दूसरे से, नाटक का भ्रम बनाए रखने के लिए बोलते हैं, पर वास्तव में वे दर्शकों से सीधे ही बोल रहे हैं। इस नाटक का हास्य भी दर्शकों को सामाजिक समस्याओं की ओर खींचने वाला कांटा है···समस्याएं जो वास्तव में बहुत गंभीर हैं। तभी नाटक का अन्त विषादयुक्त और गम्भीर कोरस से होता है।

नाटक के चरित्रों और दर्शकों के बीच एक सजीव, पर विचार-शील आदान-प्रदान को स्थापित करके लाल ने हिन्दी के नये नाटक को इसके लिए तैयार कर दिया है कि अब वह रंगशाला से बाहर सड़क पर आ सकता है। कथा कहने के बजाय वह जीवन के ज्वलंत प्रश्नों को महसूस कराए। इस दिशा में आगे बढ़ने से नाटक जीवन तक आ सकेगा, उसको अभिव्यक्ति दे सकेगा और उससे जीवन प्राप्त करेगा।

—भरत गुप्त

अंग्रेज़ी विभाग
हिन्दू कालेज
दिल्ली

'अब्दुल्ला दीवाना' का पहला प्रस्तुतीकरण 'अभियान' द्वारा फाइन आर्ट्स के मंच पर, नई दिल्ली में, अट्ठाइस फरवरी, उन्नीस सौ तिहत्तर को हुआ।

भूमिका में

चपरासी	: बी० पी० सक्सेना
पुलिस	: सुदेश स्याल
पुरुष	: अशोक सरीन
डाइरेक्टर	: राजा
युवक	: हरीश कश्यप
सरकारी वकील	: शंकर तायल
वकील	: सुशील बनर्जी
जज	: गोविन्द देशपांडे
स्त्री	: सुधा चोपड़ा
युवती	: कविता नागपाल

निर्देशक —श्याम अरोड़ा
प्रकाश और मंच — ओ० पी० कोहली
संगीत —पी० एम० बत्रा

अब्दुल्ला दीवाना

(दृश्य : पीछे जज की मेज-कुर्सी। उसके पीछे जूरी की छः खाली कुर्सियां। सामने खुले मंच पर लकड़ी के कुछ आसन इधर-उधर रखे हैं। पीछे मेज-कुर्सी पर प्रकाश आते ही पृष्ठभूमि से कुत्तों के भौंकने की आवाजें आने लगती हैं। चपरासी आता है—)

चपरासी : सुनो, फिर आ गए भौंकने। अरे ओ भाई, प्यारे, यार चुप भी हो जाओ। क्या रखा है वही ओउ—ओउ···औ··· अऊ···। लो, अब और तेज़ी में आ गए। अच्छा, करता हूं दवा। इन्हें चुप कराने की मीठी गोलियां खिलाता हूं। (मेज़ की ड्रार में ढूंढ़कर निकालना) अरे···रे···रे···कोर्ट में घुस आया···। धत्त···धत्त···धत्त। (दौड़कर लाठी लेता है—दौड़ता है। लगता है एक कुत्ता मेज़ के नीचे छिप गया है।) वाह बेटा, अब यहां छिप गए। जैसे यह लाठी अब वहां तक नहीं पहुंचेगी। वाह! क्या मोंछों पर ताव दिए बैठा है। पूंछ भी हिलाता है। आंखें देखे···जैसे यही जज है बड़का। आ···आ···पू···चू···चू···आ। अबे, निकलता है कि नहीं? आ···तू···तू···तू···। अरे, क्यों मेरी जान लेने पै तुला है? ले···ले, मिठाई ले। मिठाई पसन्द नहीं? अच्छा, बिस्कुट ले। तो भाई, मेरी जान लेगा? अबे, वह लाठी मारूंगा कि भेजा निकल आएगा। अब सम्हालो! इस पर साम-दाम-दंड किसी का कोई असर नहीं···। अब आप ही बताइए, क्या किया जाए। पहले ज़माने में कुत्ते

एक ही महीना भौंकते थे, अब बारहों महीने भौं···अऊ··· अऊ···औउ। हां, किया भी क्या जाए, इत्ते सारे तो अखबार निकलने लगे हैं। (सहसा) रुको वक्त हो गया है तो क्या करूं। आपसे मतलब। अजी वाह, मैं क्यों न दूं लिच्चर ? हां, तो साहब मैं क्या भौंक रहा था।···अरे, भाग गया। देखा न, अब भागा लिच्चर के डर से। हां, तो साहब, अदालत का काम शुरू होना चाहिए। अजी साहब, रुकिए···बिना पुकार के धड़ाधड़ अन्दर घुसे आ रहे हैं। हयं, अदालत है कि कोई मज़ाक है···बड़े आए। हां तो बज क्या रहा है ? घड़ी बंद है। आप कहेंगे चाभी देना भूल गया। ऐसी बात नहीं। हां, अब चलने लगी। आटोमैटिक है !

(कंघी से बाल झाड़ता है।)

चपरासी : मगर ये कुत्ते तो चुप नहीं होते, अदालत कैसे चलेगी ? ये लो खाव मीठी गोलियां। (इधर-उधर फेंकता है) ना चुप हो मेरी बला से। राम कसम, अब आप ही बताइए, इन्हें कोई कैसे समझाए। इनके मतलब हैं इन्हें खाना दो··· रहने की जगह दो···काम दो। मतलब, गरीबी हटाओ। समझ लीजिए यह बीमारी वहां तक पहुंच चुकी है। इलेक्शन मेनिफेस्टो चबा-चबाकर पेट में रख लिया है ससुरों ने। 'इस्पीचें' बड़े गौर से सुनी हैं। अरे, तो मैं क्या करूं ? मेरी जान लोगे ? यह नहीं कि ज़रा धीरज और सब्र से काम लें। अरे भाई, होगा···होगा···! गरीबी-अमीरी कोई एक दिन की तो बात है नहीं। अयं सोचने की बात है। मैं गलत तो नहीं कह रहा, यह हज़ारों साल पुरानी चीज़ है। हां, हां, यह सही है इधर जितनी अमीरी बढ़ी है···उधर उतनी ही गरीबी बढ़ी है···वह तो होना ही था ···इसमें भों···भों करने की इत्ती क्या ज़रूरत ? धत्तेरे की···।

(पुलिस अफसर का प्रवेश)

पुलिस : देखते नहीं कोर्ट का समय हो गया।

चपरासी : जै हिन्द साहब।

पुलिस : आज बड़ी उमस है !

चपरासी : धत्तेरे की···राम कसम, यही तो कह रहा था, सब्र से काम लेना चाहिए। यह दुनिया कोई एक दिन में तो बनी नहीं। आखिर भगवान ने भी काफी वक्त लगाया होगा। सोचा-विचारा होगा।

पुलिस : ज़मीन को ठंडा होने में हज़ारों-लाखों साल लगे होंगे। फिर पेड़-पौधे, जीव-जन्तु बनने में···।

चपरासी : और आदमी बनने-बनाने में कितना समय लगा होगा। सोचने की बात है, सर। मेरे नाना कहते थे, भगवान ने बहुत सोच-समझकर काला-गोरा, अमीर-गरीब, छोटा-बड़ा दुबला-मोटा, सुन्दर-असुन्दर बनाया। मेरे बाबा इसी को भगवान की लीला मानते थे।

पुलिस : मेरे बाबा इसे पूर्वजन्म का कर्मफल मानते थे।

चपरासी : सर आपके बाबा सन्निपात के रोगी रहे होंगे।

पुलिस : मेरे बाबा कहते थे, पूर्वजन्म का कर्मफल होता है।

चपरासी : मेरे बाबा कहते थे—कद्दू होता है।···बताइए भला—पूर्वजनम करमफल। जैसे सड़ी हुई ककड़ी चबा रहे हों !

पुलिस : गरीबी-अमीरी भगवान की लीला है।

चपरासी : लीला नहीं, पोंप लीला···पूऊ···ऊ···ऊ···ऊ।

पुलिस : चुप्प।

चपरासी : चौप्प।

पुलिस : लोग तेज़ी से अमीर हो रहे हैं।

चपरासी : लोग तेज़ी से गरीब हो रहे हैं।

पुलिस : छोटी मछलियां बड़ी मछलियों की खुराक हैं—यह कुदरत का उसूल है। बंद कर चांय-चांय।

चपरासी : अब्दुल्ला, छोटी मछली है ? धत्तेरे की।

पुलिस : अगर इन्सान को तरक्की करनी है···गरीब से अमीर होना है तो उसे तेज़ भागना ही होगा। और अब्दुल्ला को कुचल-कर मरना ही होगा।

चपरासी : नहीं, नहीं। उसे जान-बूझकर मारना ही होगा। यही बात है ना? सच्ची-सच्ची कहो, हां···लो बीड़ी पियो।

पुलिस : हट बे, मैं बड़ी चीज़ पीता हूं···।

चपरासी : बड़ी चीज़···बड़ी चीज़···कुतुबमीनार?

पुलिस : सुन···चीन के एक बहुत बड़े क्रान्तिकारी ने कहा है—गरीबी से अमीरी के लिए जब क्रान्ति होती है तो बीच में खामखा आने वाली तमाम चीज़ें खत्म कर दी जाती है···। मतलब उन्हें अपनी ही मौत मरना होता है।

चपरासी : किन्हें मरना होता है···?

पुलिस : रुकावट डालने वाली हर चीज़ को मारना पड़ता है···।

चपरासी : फिर सरकार अब्दुल्ला के 'मरडर केस' को क्यों लड़ रही है?

पुलिस : (हंसता है) बता, यह सरकार किसकी है?

चपरासी : हमारी।

पुलिस : इसे चलाता कौन है?···

चपरासी : हम चलाते हैं।

पुलिस : (चिढ़ाता है) हम चलाते हैं!···अरे बेटा, सब नाटक किया जाता है।···वही गोली चलाता है···फिर वही जांच करता है···समझे? उल्लू बनाने की यह नौटंकी···

(दोनों गा पड़ते हैं)

मुद्दत हुई न कहीं शादी है, न कोई अफसाना।
बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना॥
हम गैरों की सियासत की बात करते हैं।
मगर अपनी गली के कुत्तों से डरते हैं॥
हम जानते हैं मुद्दत से चिराग जले,

सिर्फ जलता आया है वही परवाना।
बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना॥

चपरासी : अरे···रे···रे···यह हम लोग क्या कर रहे हैं?

पुलिस : यही तो पता नहीं।

चपरासी : हम लोग अमरीका रूस अफरीका हो रहे हैं।

पुलिस : बेटा, अदालत का समय हो गया, पुकार कर।

चपरासी : किसे पुकारूं, सर्र!

पुलिस : बन्द कर बकवास···हाकिम आने को हैं।

चपरासी : तो करूं पुकार?···अरे, सुनो भाई सुनो···अब्दुल्ला को कहीं देखा है···अरे वही भाई, वही···वही···देखिए सब ही-ही-ही कर रहे हैं···कहते हैं, अब वह कहां मिलेगा··· अब बताइए।

पुलिस : अरे मुल्जिमान को पुकार।

चपरासी : अब्दुल्ला को कत्ल करने वाला हाज़िर हो।
देखिए, कोई नहीं आता। लोग कह रहे हैं, यह मुहावरा ही बदल दीजिए, लोग खामखा इसका गलत अर्थ लगाएंगे।

पुलिस : बस, बस, मुल्जिम को पुकार···! नाम लेकर।

चपरासी : बताइए, क्या नाम है?

पुलिस : तुझे पता होना चाहिए।

चपरासी : जै हिन्द! (पुकारता है) पुरुष वल्द फादर, साकीन कहां नहीं, हाज़िर है। डाइरेक्टर वल्द झकाझक, हाज़िर है। युवक वल्द पुत्रवधू वल्द डैडी साकिन एअरकंडीशन बेड-रूम हाज़िर है···।

(एक-एक कर तीनों मंच पर आते हैं। सरकारी वकील आता है—मुंह में बोतल लगाए, पीकर बोतल पाकेट में रखता है।)

स० वकील : हरि ओम्।

(दूसरी ओर से वकील आता है।)

वकील : मैच बाक्स?···किसी के पास माचिस!···

पुलिस : कोर्ट में धूम्रपान निषेध है।

वकील : क्या ?

चपरासी : अजी अकेले बीड़ी-सिगरेट पीना मना है।

वकील : बात यह है, बिना मुंह में सिगार लगाए मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरा 'जेन्डर' ही बदल गया।

पुलिस : आर्डर ! आर्डर ! न्यायाधीश आने वाले हैं।

वकील : मैच बाक्स !

डाइरेक्टर : अजीब हाल है, हमारे वकील के पास 'मैच बाक्स' तक नहीं।

युवक : मुझे बाथरूम जाना है।

पुरुष : अब वक्त कहां है ?

युवक : 'नानसेंस'।

(युवक जाता है।)

चपरासी : सीधे जाकर धीरे से बायें घूमिए। फिर बायें···फिर सीधे। फिर दायीं ओर मुड़ जाइए···जिधर से तेज़ खुशबू आने लगे, उसी ओर बढ़ जाइए···।

पुलिस : देखना किसी से टकराना नहीं।

वकील : प्लीज़, एक माचिस लेते आना।

डाइरेक्टर : कमाल है, हमारे वकील के पास मैच बाक्स तक नहीं।

पुरुष : बड़ा होशियार है। उसी बहाने इन्स्पेक्टर की जेब में अपनी मुट्ठी खाली करेगा।

डाइरेक्टर : हमें खामोश रहना चाहिए।

पुरुष : जज आ रहा है।

(वकील पुलिस की पाकेट में हाथ डालता है। दोनों हंसते हैं। जज का प्रवेश :)

जज : कहिए, आप लोगों को कोई तकलीफ तो नहीं ?

(सरकारी वकील को छींक आती है—)

जज : ज्यादा बोलने से अक्सर गला खराब हो जाता है। फिर नज़ला और ज़ुकाम हो जाता है। ज़ुकाम छुआछूत की

बीमारी है इससे तमाम रोग पैदा हो जाते हैं···वगैरह··· वगैरह···हां, तो मैं क्या कह रहा था ?

स० वकील : हुजूर, कुत्तों का भौंकना खत्म होना चाहिए।

जज : अयँ, मैं यही कह रहा था क्या ?

वकील : जी नहीं, हुजूर फरमा रहे थे—ज्यादा बोलने से गला खराब हो जाता है।

जज : हरगिज़ नहीं। ज्यादा बोलने से गला साफ रहता है।

(जज को छींक आती है।)

जज : मतलब कि आप लोगों की रातें आराम से कटती हैं। नींदें अच्छी आती हैं। शहर के पानी में 'गैस्ट्रिक ट्रबल' नहीं है। मच्छर···मक्खियां···खटमल···चूहे वगैरह नहीं हैं। खुशी की बात है, प्रजा सुखी है और सच बोलती है। किस शायर ने कहा है···?

वकील : टुलुसीडास।

स० वकील : टुलुसीडास नहीं तुलसीदास।

जज : चपरासी !

चपरासी : हाज़िर है।

जज : ये कुत्ते अभी तक भूंक रहे हैं ?

चपरासी : हुजूर, इन्हें कित्ता भगाओ, ये फिर आ जाते हैं।

जज : इन्हें दवा क्यों नहीं खिलाते ?

चपरासी : दवा की गोलियां इन्हें मीठी लगती हैं।

जज : जाओ। उन्हें भरपेट खिलाओ।

चपरासी : आओ···आओ।

(जाता है।)

जज : मेम्बर्स आफ जूरी। सावधान ! मतलब, ध्यान से सुनिए, और गौर से मुकदमे को देखिए। मतलब, जम्हाई बंद कीजिए। क्या ? क्या कहा ? फिर से कहिए। (खाली कुर्सियों से बातें) जैसे पुराने नाटकों में 'कोरस' होता था। गोरस नहीं, कोरस। को-र-स। जनता के प्रतिनिधि।

उसी तरह 'यू आल रिप्रेज़न्ट फेक्टस, कामनसेंस···सिटिज़न'। नींद आ रही है तो मैं क्या करूं? क्यों, आप ऐसे क्यों देख रहे हैं? सुनो, इधर आओ···तुम लोगों ने अब्दुल्ला की हत्या क्यों की?

वकील : मी लार्ड। ये बेकसूर हैं।

स० वकील : मी लार्ड, ये कातिल हैं।

पुलिस : मजिस्ट्रेट के इजलास ने इन्हें अब्दुल्ला का कातिल पाया है।

जज : यह अब्दुल्ला क्या है? यह कौन है? मतलब, यह कौन था?

पुरुष : हुज़ूर, मुझे बिल्कुल पता नहीं, यह अब्दुल्ला कौन···क्या है?

डाइरेक्टर : हुज़ूर, मैं भी नहीं जानता यह अब्दुल्ला क्या है, कौन है?

स० वकील : मी लार्ड, यह डाइरेक्टर साहब काफी पुराने मुल्जिम हैं। इन पर कतल और डाके का एक मशहूर केस चल चुका है।

जज : मशहूर केस? ज़रा सुनाना तो।

स० वकील : तेईस अगस्त उन्नीस सौ पचास को दिन के ठीक एक बजे, खोसला इंडस्ट्रीज़ के साढ़े तीन हज़ार मुलाज़िमों की तनख़ाह—पांच लाख रुपयों पर खुद कम्पनी के मालिकों ने ही डाका डाला।

जज : आप तो ऐसे बोल रहे हैं, जैसे 'ईवनिंग न्यूज़' पेपर बेच रहे हों। फिर से बोलिए और नमक-मिर्च थोड़ा कम लगाइए।

स० वकील : खोसला इंडस्ट्रीज़ के मालिकों ने खुद अपनी ही दौलत पर डाका डाला।

जज : अच्छा किया। शाबाश!

स० वकील : उस डाके में कम्पनी के कैशियर और दरबान की जानें गईं। इत्ता बड़ा जुल्म और गुनाह!

जज : चपरासी, ज़रा कुछ लाओ कान खोदने के लिए···

(चपरासी पाकेट में से निकालकर देता है।)

जज : (कान खोदते हुए) सारी इन्द्रियों में यह जो कान है न, इसे कभी आराम नहीं मिलता। सारी इन्द्रियां जब सो जाती हैं, तब भी यह जागा होता है। इसके फाटक कभी बन्द ही नहीं होते।

स० वकील : सेशन कोर्ट से इन्हें सज़ा हो गई थी।

जज : सब बदमाशी इसी कान की है। इसे जितना ही खोदो, मैल निकलती ही रहेगी।

वकील : मी लार्ड, हाई कोर्ट ने इन्हें बेकसूर छोड़ दिया।

जज : एक हाथ लम्बी ककड़ी और उसमें नौ हाथ बीज, सब शरारत इसी कान की है।

वकील : उस पुराने, खत्म हुए केस से इस केस का क्या ताल्लुक?

पुलिस : मी लार्ड, ये सब कातिल हैं।

पुरुष : 'अनपालियामैन्ट्री'।

जज : आप लोगों की मातृभाषा अंग्रेज़ी है न? बड़ी अच्छी भाषा है। बड़े फायदे हैं इस ज़ुबान से।···आपकी तारीफ?

डाइरेक्टर : डाइरेक्टर, खोसला इंडस्ट्रीज़।

जज : बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर। आपकी तारीफ?

पुरुष : हुज़ूर, कैसे बताऊं। सब जानते हैं मुझे। खुदा के बन्दों की सेवा··।

जज : बन्दरों की सेवा?

पुरुष : बंदा और बंदर सभी तो उस ब्रह्मा की सृष्टि हैं। एको अहम बहुस्याम।

जज : अरे, आप तो बड़ी ऊंची चीज़ हैं।···

पुरुष : वेदान्त कहता है···भोग वैराग्य के भाव से करो।

जज : आर्डर···आर्डर···। भोग में वैराग्य? देखो मुझे नज़ला हो गया ना।

(छींकना)

पुरुष : ऊं···हरि ओम् ।

जज : मुंह बन्द रखिए ।

पुलिस : वह लौंडा किधर गया ? कहां गया ?

स० वकील : मी लार्ड, यह मजिस्ट्रेट का 'जजमेन्ट' है···।

वकील : मी लार्ड, यह मामला पोलिटिकल है ।

स० वकील : मी लार्ड, यह मामला···।

जज : लड़ो नहीं, लड़ो नहीं !···हां, तो भाई, आपको उस पिछली बार दिन-दहाड़े अपनी ही दौलत पर डाका डालने की क्या ज़रुरत पड़ी ?

डाइरेक्टर : हमने डाका नहीं डाला था ।

जज : बेशक···बेशक । वरना पैंट की क्रीज़ खराब न हो जाती । ये सूट कहां के हैं ? ओह, इम्पोर्टेड है । आप दोनों इस कदर गमगीन क्यों हैं ?

पुरुष : हुजूर, हमें खुदा का डर है । हम शरीफ, इज्जतदार लोग हैं । हमें यकीन है—खुदा चारों ओर है ।

जज : ऊपर क्या इशारा किया ?

डाइरेक्टर : हम ज्यादा बोलकर आपका वक्त नहीं बरबाद करते ।

जज : बहुत खूब···बहुत खूब । फिर से तो कहिए ।

पुलिस : हुज़ूर, इनकी हवा खिसकी है ।

जज : क्यों, यह मुहाविरा सही है ?

स० वकील : यह मुहावरा अब गलत हो चुका है । हवा अब खिसकती नहीं, रुक जाती है । हवा 'फोर्टी सेविन' से पहले खिसकती थी ।

चपरासी : जब लोगों की भूख कम थी । भोजन से जब पेट भर जाता था ।

जज : आर्डर···आर्डर । 'कम टू द प्वाइन्ट' ।

स० वकील : मी लार्ड, ये कातिल हैं···डाकू हैं । बेहिसाब दौलत इनकी कोठियों में जमा है ।

वकील : गलत है । ये निहायत मेहनती लोग हैं । एक-एक पैसे के लिए इन्होंने खून-पसीना एक किया है । इन्होंने इस मुल्क की गरीबी हटाई है । इनसे 'स्टैंडर्ड आफ लिविंग' बढ़ी है । ये हमारे समाज की शोभा हैं । ये न होते तो छब्बीस जनवरी, पन्द्रह अगस्त, 'न्यू इयर्स डे' सूना-सूना लगता ।

स० वकील : इन्होंने समाज में गरीबी बढ़ाई है ।

पुरुष : हरि ओम् ! सर्वे भवन्ति सुखिना ।

जज : यह क्या ? यह बदबू कहां से आई ? किसे है गैस्ट्रिक ट्रबल ? (सूंघता है) दरअसल कई हज़ारों वर्षों से इस मुल्क का पेट खराब है ।

(युवक आता है ।)

जज : आपकी तारीफ ? इसका 'जेन्डर' क्या है ?

चपरासी : धत्तेरे की । यही नहीं पता ।

पुरुष : 'सनी' ।

जज : 'सनी या सन' ?

पुलिस : हुज़ूर, यह सनसनी चीज़ है ।

पुरुष : सनी, अंकल को नमस्ते करो ।

जज : मैं किसी का अंकल-पंकल नहीं । इसका मुंह किधर है ?

स० वकील : मी लार्ड, यह भी मुल्ज़िम है । इसने···

जज : पहले इसका 'जेन्डर' तै करो ।

पुरुष : यह हिप्पी है ।

डाइरेक्टर : हमें खामखा इस केस में फंसाया गया है ।

जज : आपका गला ठीक है ?

डाइरेक्टर : जी, बिल्कुल ।

जज : कुछ गाकर सुनाइए ।

डाइरेक्टर : मैंने अपनी जिन्दगी तीस रुपये महीने की एक नौकरी से शुरू की । मेरे गवाह मौजूद हैं···मैंने किसी तरह से नौकरी छोड़कर रद्दी कागज़ों की एक दूकान खोली । खाली बोतलें भी खरीदने लगा । उस छोटी-सी दूकान से फिर मैंने

करते-करते···एक दिन ऐसा हुआ कि···

चपरासी : बस में चढ़ते हुए एक बूढ़े आदमी की पाकेट मारी और गरीबी हटाने में जी-जान से लग गए···!

डाइरेक्टर : यह गलत है। मेरे गवाह मौजूद हैं···मैं बुलाता हूं···

(दाईं ओर विंग में शोर उठता है। चपरासी गवाहों को अन्दर आने से रोकता है।)

जज : नहीं, नहीं···गवाह नहीं चाहिए!···बाहर करो··· बाहर।

चपरासी : पांच-पांच रुपयों में गवाह मिलते हैं, हुज़ूर बड़ी बेकारी है।

पुरुष : मुल्क से बेकारी दूर करने के लिए मेरे पास चंद तरकीबें हैं। मैंने एक स्कीम···

जज : बंद कीजिए लेक्चर।

पुरुष : हुज़ूर, मैं सच कहता हूं।

जज : सच कहने की यहां कोई ज़रूरत नहीं।···आगे बढ़िए। अरे-रे-रे ··कहां बढ़े जा रहे हैं?

पुरुष : हुज़ूर, मेरा एक 'एप्वाइन्टमेंट' है। मुझे गीता पर एक प्रवचन देने जाना है।

जज : प्रवचन मुझे दीजिए, महाप्रभ्।···आपसे कहा था, कुछ गाकर सुनाइए···।

डाइरेक्टर : हमें गाने-बजाने का कोई शौक नहीं।

जज : फिर शौक क्या है?

डाइरेक्टर : वकील साहब बता सकते हैं।

वकील : गोल्फ।

जज : तुम्हारा?

पुरुष : धर्मशास्त्र।

जज : इस 'कॉमन जेन्डर' का?

युवक : एल० एस० डी०।

जज : शाबाश! इन्कलाब ज़िन्दाबाद!

(जज अपनी कुर्सी पर उछल पड़ता है।)

जज : तुम लोगों ने अब्दुल्ला की हत्या क्यों की?

पुरुष : मैंने?

जज : सरकारी वकील, जिरह शुरू करो।

स० वकील : पुलिस की रिपोर्ट्स और गवाहों के बयानात से ज़ाहिर है, अब्दुल्ला से आपकी दुश्मनी थी।

पुरुष : मेरी? हरि ओम···हरि ओम।

स० वकील : रास्ता चलते, एक बार आपने उसका मुंह नोंच लिया था। उसके कपड़े फाड़ डाले थे। उसे गालियां बकी थीं।

पुरुष : हे भगवान, मैं यह क्या सुन रहा हूं!

स० वकील : वह जब-जब आपसे मिला है—या जब भी आपकी उससे मुलाकात हुई है, आपने उसका अपमान किया है। उसे भद्दी से भद्दी गालियां बकी हैं।

वकील : गलत। इन बेसिर-पैर की बातों का सबूत क्या है?

स० वकील : सबूत है।

वकील : मेरे पास भी सबूत है—अब्दुल्ला नाम का कोई ऐसा आदमी नहीं है, जिससे कभी भी इनका कोई ताल्लुक रहा हो। यह सरासर झूठा केस है जो ऐसे शरीफ इज्ज़तदार लोगों के गले खामखा लटकाया जा रहा है। मैं पूछता हूं सरकार से, अदालत से, जूरी समाज से, यह अब्दुल्ला कौन था?

जज : पुलिस, उसकी पोस्टमार्ट क्या है?

पुलिस : हुज़ूर, उसकी लाश कहां मिली! सारी नदियां, सारे पहाड़, जंगल छान डाले गए। नाले-नालियां, कूड़ेदान, नाबदान, मेनहोल···।

जज : फिलट···फिलट···फिलट।

(चपरासी हवा में फिलट करता है।)

जज : सरकारी वकील, बयान जारी रखो।

स० वकील : उसकी हत्या इन्होंने की। इन्होंने हत्या के लिए उकसाया

और यह खड़ा देखता रहा।

वकील : हत्या का सबूत कहां है ?

स० वकील : उसके गले पर इनकी उंगलियों के निशान के सबूत हैं।

वकील : मी लार्ड, अभी इन्होंने बयान दिया है, उसकी लाश नहीं मिली। फिर उंगलियों के निशान का सवाल बेबुनियाद है।

जज : रुको नहीं। बयान जारी रखो।

स० वकील : जिन्होंने उसकी लाश देखी है—यह उनका बयान है। दोनों हाथों से इन्होंने उसका गला घोंटा है। वह चीखता रहा। उसकी चीख रेडियो में सुनाई पड़ी थी।

जज : उस वक्त रेडियो सेट में क्या प्रोग्राम आ रहा था ?

स० वकील : कज्जन बाई ठुमरी गा रही थीं—वह नेशनल प्रोग्राम था। तभी उसकी चीख सुनाई पड़ी।

जज : चीख सुर में थी या बेसुरी ?

स० वकील : मैं 'विविध भारती' सुन रहा था।

युवक : हेरी कृष्णा। हेरी रामा।

जज : बन्द कीजिए हरिकीर्तन।···बोलिए, आपकी अब्दुल्ला से दुश्मनी क्यों थी ?

पुरुष : हुजूर, मैं जिसे जानता नहीं, जिसे कभी देखा नहीं, उससे दुश्मनी का सवाल ही नहीं उठता।

जज : ठीक है। हर मुल्जिम इसी तरह सफाई देता है। मगर वह बिना जाने-सुने कत्ल करता है। बिना देखे गला घोंटता है। बिना दुश्मनी के पिस्तौल चलाता है। आपसे अब्दुल्ला की मुलाकात कब हुई ?

पुरुष : कभी नहीं।

जज : कभी तो देखा होगा। आप धार्मिक इन्सान हैं। आपके गीता-प्रवचन में कभी वह आया हो। कहीं उसे देखा हो, सुना हो।···भाई, मैंने उसे देखा है। मेरी मुलाकात हुई है उससे।

(आश्चर्य से सभी आपस में बातें करने लगते हैं।)

जज : इसमें इतनी कानाफूसी क्यों ? हर आदमी से उसकी मुलाकात हुई है।

चपरासी : हुजूर, मेरी उससे मुलाकात मूंगफली की दुकान पर हुई थी। वह बहुत भूखा था, बेचारा !

जज : आर्डर···आर्डर···

वकील : यह झूठ है मी लार्ड। अब्दुल्ला मूंगफली नहीं खा सकता, उसे 'नान वेजीटेरियन' होना चाहिए।

जज : भाई अब्दुल्ला किसी एक ही इन्सान का नाम तो नहीं। हजारों हो सकते हैं। वह वेजीटेरियन-नानवेजीटेरियन दोनों हो सकता है।

पुरुष : फिर तो एक ऐसे अब्दुल्ला से मेरी भी मुलाकात हुई थी।

(लोग परस्पर बातें करने लगते हैं।)

वकील : आप भी खामखा बातों में आ गए। कबूल करना खतरनाक है।

पुरुष : उन्नीस सौ बीस की बात है। मैं बन्दूक लिए शिकार खेलने गया था। सारा दिन जंगल में घूमता रहा। कहीं कोई शिकार न मिला। थका-उदास एक पेड़ के नीचे बैठा सिगरेट पीने लगा। जंगल के लंगूर मुझे परेशान करने लगे। गुस्से में आकर मैंने बन्दूक तान ली। न जाने कहां से आकर तभी किसी ने मेरी बन्दूक थाम ली। बोला, जिन्हें तुम खा नहीं सकते, उनकी जान क्यों लेते हो ? एकटक वह मेरी आंखों में देखने लगा। मुझे अच्छा नहीं लगा। उसे एक ओर झाड़कर मैंने बन्दूक चला दी। घायल लंगूर दोनों हाथों से डाल थामे हवा में लटककर चीखने लगा। कितने लंगूर आकर उसे गिरने से रोकने लगे। मैंने गुस्से में आकर दूसरा, तीसरा फायर किया। लंगूरों की लाशें जमीन पर गिरीं। मैं चल पड़ा। घूमकर देखता हूं—वह आदमी उनकी लाशों पर झुका न जाने क्या निहार रहा था।

वकील : जंगल की इस कहानी से अब्दुल्ला की हत्या का क्या

ताल्लुक ?

स० वकील : फिर उससे आपकी दुश्मनी हुई ?

पुरुष : उसके बाद मैंने उसे नहीं देखा।

स० वकील : यह कैसे हो सकता है ? पुलिस की रिपोर्ट है—आपने एक बार उसे थप्पड़ मारा है।

पुलिस : उसकी नाक नोंची है, धक्के दिए हैं। उसके कपड़े फाड़े हैं।

स० वकील : और यह उस कत्ल को खड़ा देखता रहा—अपने आराम, ऐय्याशी, लक्जरी और फ्रीडम के नशे में धुत्त···।

जज : (सहसा) धुत्त ! ···ह्वाट इज दिस 'धुत्त' ?

स० वकील : धुत्त मीन्स···क्या मतलब ?

पुलिस : धुत्त माने धुत्त।···

चपरासी : मुझसे पूछो···धुत्त माने नशे में धुत्त।

युवक : अब्दुल्ला मेरे लिए 'नानसेंस' है।

पुलिस : खबरदार, यह सेशन कोर्ट है।!

(युवक बढ़कर अपनी गिटार ले आकर बजाने लगता है।)

जज : मुल्जिमान, वकील, जूरी और हाजरीन ! बताओ यह किसी की शादी है ? यह बारात आई कहां से ? कौन है दूल्हा ? कौन है दुल्हन ? कौन है अब्दुल्ला ? कहां का है ? कैसा है ? कहां से आया है ? कहां गायब हुआ ?

स० वकील : मी लार्ड, यह अब्दुल्ला यहां का बहुत पुराना बाशिंदा है। यह सबको पहचानता है। लोग इसे पहचान कर इससे आंखें चुराते हैं। इतिहास का कहना है, पार्टीशन के दिनों में साम्प्रदायिक दंगों में यह मारा गया। कोई कहता है, फोर्टी सेवन के बाद यहां एक नया अब्दुल्ला आया। कोई कहता है, साम्प्रदायिक दंगों में वह मारा नहीं गया, कहीं छिप गया और अब नया रूप बनाकर हमारे बीच में घूमता है। लोगों ने मिलकर उसे मारा है। पर उसकी लाश नहीं मिलती। कोई कहता है, वह मरकर भूत-प्रेत हो गया है।

कोई कहता है, वह जिन्दा है। मतलब, काफी दिनों से वह लापता है। मगर वह है। पर कोई उसे देखता नहीं। वह बोलता नहीं, पर उसकी आवाज़ सुनाई पड़ती है।

चपरासी : राम कसम, मैंने भी कभी नहीं देखा, हां।

जज : मतलब, उसका परिचय नहीं है। वह महज़ महसूस किया जा सकता है। उसे कुछ कहना बेकार है। वह खुद अपनी भाषा है। वह भाषा बनाता है। वह बोलता है। मगर उसके मुंह नहीं। वह हर वक्त काम करता है—चलता-फिरता रहता है, मगर उसके हाथ-पैर नहीं।

चपरासी : हां, हुजूर, मैंने देखा है—मेरे नाना के मामा थे, उनके हाथ-पैर नहीं थे, पर वह चलते थे। वह गूंगे थे, पर लिच्चर देते थे। उनके पास सांप आकर लेटा करते थे। वह खाते-खाते एक दिन सो गए। सुबह जगे तो चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—बचाओ···बचाओ···।

जज : आर्डर···आर्डर···। तेरी यह हिम्मत, तू इजलास में टांग अड़ाता है।

चपरासी : (दौड़ता है) कुत्ता···कुत्ता···मारो।

(जैसे वहां घुस आए कुत्ते को बाहर खदेड़ता है।)

चपरासी : हुजूर, मीठी गोलियों की लालच में यहां आया था।

जज : बंद करो बाबा।

युवक : नानसेंस।

जज : बयान जारी रखो।

पुरुष : तब से आज तक उस अब्दुल्ला को नहीं देखा।

जज : तुम्हारी शादी हुई है ?

पुरुष : शादी ? या शादियां···मतलब मुझे गरीबी से नफरत है, वह कैसी भी हो।

जज : शादी।

पुरुष : शादी !

(प्रकाश बुझकर फिर उभरता है—पुरुष और

डाइरेक्टर बड़ी तेजी से चल रहे हैं। बीच-बीच में तेजी से हंस पड़ते हैं।)

डाइरेक्टर : भाई साहब, रुकिये···रुकिये।

पुरुष : सुनो, सुनो···सुनो भाई, सुनो।

डाइरेक्टर : आप किसे पुकार रहे हैं ?

पुरुष : सुनो भाई, सुनो।

डाइरेक्टर : कहां भागे जा रहे हैं ?

पुरुष : छोड़ दो···छोड़ दो मुझे।

डाइरेक्टर : अब भागने से काम नहीं चलेगा। शादी कर ही लीजिए।

पुरुष : किससे ?

डाइरेक्टर : उसी से जो पिछले कितने सालों से आपसे मुहब्बत कर रही है। आपके इंतजार में खड़ी है।

पुरुष : खड़ी कहां है ? वह जा रही है। नहीं-नहीं, आ रही है। वह पीछा कर रही है।

डाइरेक्टर : जज बार-बार आपकी शादी के बारे में पूछ रहा है।

पुरुष : वह बदमाश है।

डाइरेक्टर : वाकई वह औरत आपसे मुहब्बत करती है। वह कब से आपकी सेवा कर रही है। रुकिये···रुकिये मैंने पंडित को बुला रखा है। आपको आज शादी करनी ही होगी।

पुरुष : अजी, क्या बकते हो ! मैं इतना बड़ा धर्मात्मा···गीता का उपदेश देने वाला। इस उम्र में उससे शादी करूं, लोग क्या कहेंगे ? किस मेहनत से अपनी इज्जत बनाई है।

डाइरेक्टर : जज की नज़रों में आप ऊंचे उठ जाएंगे। वह हर शादी-शुदा को बेकसूर समझता है।

पुरुष : हे कृष्ण भगवान !

डाइरेक्टर : अब्दुल्ला के मरडर केस से छूट जाने के लिए हमें कुछ भी करना होगा। जज बार-बार आपकी शादी के बारे में पूछ रहा है।

पुरुष : जज की लड़की से मैं अपने लड़के की शादी पक्की कर चुका हूं। यह 'ट्रंप कार्ड' है मुकदमा जीतने के लिए।

डाइरेक्टर : यह बात हम किसी को बता नहीं सकते वरना उस जज के इजलास से हमारा मुकदमा किसी और जज के पास चला जाएगा।

पुरुष : तुम डरपोक हो। तुम्हें गीता में विश्वास नहीं।

डाइरेक्टर : फिलहाल मुझे आपकी शादी में विश्वास है।

पुरुष : मुझे सोचने का मौका दो, भाई···ई ! औरतों से मैं ऊब चुका हूं।

डाइरेक्टर : सारा कुछ सोच-विचार कर आपकी इस शादी के नतीजे पर आया हूं। इससे कितने फायदे हैं—नम्बर वन, पुलिस इंसपेक्टर उस औरत का फर्स्ट कज़िन है, नम्बर दो—वह 'आलरेडी' मां बनने वाली है।

पुरुष : चुप रहो। मैं इच्छाओं से ऊपर उठ गया हूं। हे अर्जुन, मेरा जन्म और कर्म अलौकिक है। जो मुझे इस रूप में जानता है, वह हमेशा खुश रहेगा।

डाइरेक्टर : कहां जा रहे हैं ? रुकिये।

पुरुष : कोई आ रहा है···मैं इस वक्त किसी से नहीं मिलना चाहता—कह देना, मैं बंबई गया। बंबई···बंबई !

(तेजी से भीतर जाता है। बाहर से स्त्री आती है।)

स्त्री : कहां हैं ? वह कहां हैं ?

डाइरेक्टर : बम्बई गए, बम्बई।

स्त्री : क्या ?···अभी यहीं थे, मैंने उनकी बोली सुनी है।

डाइरेक्टर : हां हां, अभी गए हैं, अभी।

स्त्री : हमारी शादी ? पंडत भी नहीं आया ?

डाइरेक्टर : वो कह रहे थे, शादी समझो हो गई है···क्या फर्क पड़ता है।

स्त्री : मैंने कितनी बार बताया है—मुझे शादी करने का बड़ा शौक है। अच्छा लगता है दुल्हन बनना। मैं उनके गले में जयमाला डालूं···वो मेरे गले में···और पंडत मंत्र पढ़ता

रहे। आई लाइक इट वैरी मच···इट इज़ फन्टास्टिक··· यू नो।

डाइरेक्टर : मगर यह ड्रामा तो कभी हो सकता है।

स्त्री : फिर कौन करता है जी ?···इसीलिए तो मैंने···

डाइरेक्टर : जी हां, बिल्कुल ठीक। मैं भी यही चाहता हूं। लेकिन उन्होंने कहा, हम बाद में इत्मीनान से कहीं बाहर चलकर शादी करेंगे। बहुत बड़ी शानदार बारात···आतिशबाज़ी ···बैंड-शहनाई।

स्त्री : मुझे बारात-वारात कुछ नहीं चाहिए···बस, दो, पंडत, दो-चार लोग, और कुछ नहीं।

डाइरेक्टर : उन्होंने बड़ी अच्छी स्कीम बताई—किसी फिल्म की स्टोरी में आप दोनों फिट हो जाएंगे···एक बढ़िया शानदार शादी का दृश्य। दुनिया सोचेगी, यह फिल्म है और आपकी सारी तमन्ना भी पूरी हो जाएगी। सोचिए भला, फिल्म में शादी की तैयारी से लेकर सुहागरात तक सीन।

स्त्री : मगर इत्ता वक्त कहां है ? तक तक तो मैं मां बन जाऊंगी ?

डाइरेक्टर : समझती हैं, फिल्मी हिरोइनें कुमारी रहती हैं ?

स्त्री : वह कहां गए ?

डाइरेक्टर : अरे···रे-रे···। कहां जा रही हैं ? भीतर कोई नहीं है।

स्त्री : मुझे देखने तो दो···भीतर से उन्हीं की छींक आई है।

डाइरेक्टर : भीतर कोई मेहमान आए हैं।

स्त्री : कौन ? कहां से ?

डाइरेक्टर : वह जो मुल्क है न···बम्बई से आगे···अरे, स्वेज़ नहर के पास···ओ हो क्या मुल्क है ! अच्छा-सा नाम है ?···

स्त्री : देखती हूं ?

डाइरेक्टर : ना···ना ना। वह थके सो रहे हैं।

स्त्री : तो क्या, देखकर लौट आऊंगी।

(जाने से रोकता है।)

स्त्री : छोड़ो, नहीं तो बुलाती हूं अपने फर्स्ट कज़िन को। कज़िन,

ओ मेरे फर्स्ट कज़िन।

(पुलिस का प्रवेश)

पुलिस : क्या है, मेरी प्यारी कज़िन सिस्टर ?

स्त्री : यह कहते हैं, वह बम्बई चले गए।

(पुलिस इन्सपेक्टर मूजा खा रहा है।)

डाइरेक्टर : जी हां, बम्बई···बम्बई। वह जो अरब की खाड़ी के किनारे मुम्बई है···मुम्बई।

(इन्सपेक्टर डाइरेक्टर के मुंह में मूजा भर देता है।)

डाइरेक्टर : शादी होगी···ज़रूर होगी।

पुलिस : देखता हूं उसे अन्दर···यह जाने न पाये। खबरदार !

(पुलिस इन्सपेक्टर अन्दर जाता है।)

स्त्री : हे···जाते कहां हो ?

डायरेक्टर : चलो, भाग चलें।

स्त्री : हट कलमुंहे। मैं पतिव्रता हूं···हां। हे-हे, जाता कहां है ! बुलाऊं फर्स्ट कज़िन को ?

डाइरेक्टर : हे···हे···हे। बड़ी खूबसूरत हो !

स्त्री : क्या कहा ?

डाइरेक्टर : (ज़ोर से) बड़ी खूबसूरत हो।

स्त्री : हें···हें···हें।

डाइरेक्टर : हें···हें···हें।

(तभी भीतर से अरबी चोगा बांधे, आंखों पर काला चश्मा लगाए पुलिस के साथ पुरुष का आना।)

स्त्री : हाय ! यह कौन है ?

डाइरेक्टर : यह···यह···उन्हीं के मेहमान हैं···काहिरा के सौदागर ···ऊंट के व्यापारी···।

पुलिस : कौन है तू ?

पुरुष : शेना रुयाशि ची बोल्ची ?

डाइरेक्टर : ये लोग पूछते हैं···आप कौन हैं ?

पुरुष : बोलचे अरबी शुदागर···ऊंटशा बोश्चे, हिन्दुस्तान काश्चो।

डाइरेक्टर : आप फरमाते हैं कि मैं अरब का सौदागर हूं। हिन्दुस्तान से ऊंट खरीदने आया हूं।

पुलिस : इसका नाम और पता ?

डाइरेक्टर : इस्मशरीफ साकिन पुश्चे।

पुरुष : अब्दुल्ला खारूं रशीद···साकिन आज़िमे दुलदुल, शहर गुलेपिनादा···काहिरा।

डाइरेक्टर : नाम है अब्दुल्ला खारूं रसीद···पता आज़िमे दुलदुल···

स्त्री : कहां से आया ? कब आया ?

डाइरेक्टर : सो सो काबशिया ? सोसाचिया ?

पुरुष : ओतनी···जुमा···जुमा···हैंची !

डाइरेक्टर : सीधे वतन से आए हैं···परसों शुक्रवार को···है।

पुरुष : पुता सांजी दोस्तआरा। जिगरी सांजा।

डाइरेक्टर : यह उनके जिगरी दोस्त हैं।

पुरुष : खुशामशीद···तशरीफ रेश्चें।

पुलिस : रेश्चें रेश्चें क्या बकता है ?

स्त्री : बदमाश लगता है।

पुलिस : क्यों बे, तू ऊंट का व्यापारी है ?

पुरुष : कमाने गोयद। लुगत फानूस। तकलीफ माफ।

डाइरेक्टर : यह आपकी भाषा नहीं जानते। तकलीफ माफ कर रहे हैं।

पुलिस : हम भी यह भाषा नहीं जानते।

(पुरुष डाइरेक्टर के कान में कुछ कहता है और अरबी ढंग की हंसी हंसता है। इन्स्पेक्टर भी उसकी नकल करता है।)

डाइरेक्टर : यह कहते हैं, हिन्दुस्तानी खूबसूरती लाजवाब है।

पुलिस : लो, इसे भूजा चबवाओ।

डाइरेक्टर : यह गुस्ताखी मैं कैसे करूं ?

(इन्स्पेक्टर डाइरेक्टर के मुंह में भूजा डालता है। उसे बनावटी खांसी आती है। वह भीतर जाने लगता है।)

पुलिस : कहां जाता है ?

डाइरेक्टर : पानी पीने···खांसी···खांसी···गला···गला···।

पुलिस : चलो इधर। मेरे साथ आओ।···तुम भी।

पुरुष : तोबा···माशाल्लाह।···केमुदगमूद।

पुलिस : आदमी नदारद।

पुरुष : किश्ती चश्मावाला ··हुश्न बादशाह परवरा।

पुलिस : बको मत।

(पकड़े हुए ले जाने लगता है।)

डाइरेक्टर : मगर हमें जाना कहां है ?

पुलिस : उसका पता लगाने।

डाइरेक्टर : हमें कुछ नहीं मालूम।

पुरुष : बेकशी···शाइस्तागुफी मासा जफरसादत।

पुलिस : अकड़ो नहीं···चलो मेरे साथ।

(खींचता है। पुरुष छुड़ाकर स्त्री के कदमों में जा गिरता है।)

पुरुष : हुश्न दरियागिंजा···तू माशा रहमदिल। मादरे जुगूबांख्तां। तार दरियागुंजा (चश्मा उतार कर स्त्री को आंख मारता है।) हे रहम तारी···खुल्द मत्तारा···बचा मुश्की···नहीं तो सब खुश्की।

स्त्री : ठीक है···तू बेकसूर है। फर्स्ट कज़िन, सुनो !

पुलिस : यस, माई सेकेण्ड कज़िन।

स्त्री : तुम कितने अच्छे हो !

पुलिस : लो, चबाओ।

(तीनों भूजा खाते हैं। स्त्री पुरुष का चोगा और चश्मा उतार लेती है।)

स्त्री : बुलाओ पंडत को। झटपट हमारी शादी कराओ।

पुरुष : मेरी जान, शादी आराम से कर लेंगे।

स्त्री : पंडत ने कहा है—आज ही, अभी शादी की फर्स्ट क्लास साइत है ! पंडत कहां है ?

डाइरेक्टर : पंडत नहीं आया।

पुरुष : फिर आ जाएगा—ऐसी जल्दी क्या है ?

डाइरेक्टर : मैं बुला लाता हूं।

पुलिस : अरे, पंडत तो मैं भी हूं···फर्स्ट क्लास शादी करा सकता हूं।

(तीनों बातें करते हैं।)

पुलिस : जवान। साइलेंस···!

पुरुष : अच्छा-अच्छा, चारों ओर से दरवाज़ा तो बंद कर लो।

डाइरेक्टर : सब बन्द है।

पुलिस : अच्छा, तैयार हो जाओ, दूल्हा, दुल्हन, सावधान।

(दोनों सावधान की मुद्रा में)

पुलिस : आराम।···अब दूल्हा आगे चलेगा···दुल्हन उसके पीछे-पीछे चलेगी···एटेहशन। कुइक मार्च। लेफ्ट राइट लेफ्ट। लेफ्ट राइट···लेफ्ट। बायें घूम। लेफ्ट राइट लेफ्ट। लेफ्ट राइट लेफ्ट। दायें घूम। लेफ्ट राइट लेफ्ट।···पीछे घूम। लेफ्ट राइट लेफ्ट। नज़र सीधी। कमर तनी हुई। लेफ्ट राइट लेफ्ट। रुक जा। सामने देख। आंख खोल। आराम।

(ड्रिल करके थक गए हैं।)

साइलेंस। नो टाक। नाऊ एटेहशन। अब दुल्हन आगे चलेगी। दूल्हा पीछे-पीछे चलेगा। कुइक मार्च। लेफ्ट राइट···कदम मिलाकर चलेगा।

(दोनों चलते हैं।)

पुरुष : यारो, कब तक यह ड्रिल चलेगी ?

स्त्री : हाय, मज़ा आ गया।

पुलिस : सावधान। अब दुल्हन अपनी जगह पर खड़ी रहेगी। दूल्हा चार कदम आगे चलेगा। कुइक मार्च। लेफ्ट राइट लेफ्ट।

लेफ्ट राइट लेफ्ट। रुक जा। अब दुल्हन सिर्फ दो कदम चलेगी। कुइक मार्च।···रुक जा। अब दूल्हा दुल्हन के गले में जयमाला डालेगा। 'एटेहशन'···जयमाला डाल।··· अब दुल्हन डालेगी···'एटेहशन'···जयमाला डाल।

(डाइरेक्टर तालियां बजाता है।)

स्त्री : अभी शादी का मंत्र कहां पढ़ा गया ?

पुलिस : सबर रखो···हो जाता है। सब हो जाता है।

डाइरेक्टर : सात बार घूमना भी तो होता है।

स्त्री : जी हां। पूरा करो 'कज़िन ब्रदर'।

पुलिस : पढ़ता हूं। पढ़ता हूं मंत्र। (स्त्री की साड़ी का पल्लू पुरुष की टाई से बांधता है।) अब मंत्र पढ़ा जाएगा और दूल्हा-दुल्हन मेरे चारों ओर सात बार परिक्रमा करेंगे। सावधान। घूमना शुरू।

(गाता है।)

छोड़ बाबुल का घर अब पी के नगर आज जाना पड़ा··· ए-हो-हे···।

(वे दोनों परिक्रमा करने हैं, स्त्री घूमती हुई गिनती जा रही है, एक, दो तीन, चार। धीरे-धीरे प्रकाश बुझ कर फिर उसी कोर्ट में उभरता है।)

जज : शादी कब हुई ?

पुरुष : बहुत ज़माना हो गया।

स० वकील : यह कौन-सी शादी है ?

पुरुष : वकील साहब, जवाब दीजिए।

वकील : दूसरी शादी। पहली शादी से यही एक लड़का है।

स० वकील : मी लार्ड, गौर करने की बात है···यह शादी इसी मुकदमे के दौरान में की गई है। अपने-आपको इज़्ज़तदार और बेकसूर साबित करने के लिए।

वकील : जी नहीं, मी लार्ड, इस शादी को हुए चार साल, तीन महीने, तेरह दिन, छः घंटे, बाइस मिनट और अब छः

सैकेण्ड हो रहे हैं।

जज : घड़ी में चाभी दे लीजिए।

स० वकील : इस शादी का सबूत क्या है ?

वकील : ये हैं कागज़ात शादी के । यह है मैरेज अलबम। ये हैं बाराती···यह हैं···।

जज : क्यों देवी जी आप इनकी बीवी हैं ?

स्त्री : और नहीं तो क्या ?

चपरासी : बहुत अच्छा जवाब दिया···और पूछो···मुंहतोड़ जवाब देगी। बड़ी सीधी-शरीफ औरत है। ऐसा करने को मजबूर हुई है।

जज : आर्डर···आर्डर।

स० वकील : ये सारे सबूत फर्जी हैं···बनाए हुए।

पुरुष : वकील साहब, दे दो असली सबूत। हरि ओम।

वकील : मीलार्ड, यह मां बनने वाली है। गर्भवती धर्मपत्नी।

जज : अयं, यह गर्भवती धर्मपत्नी क्या ?

युवक : गर्भवती मां···जननी···मदर डिवाइन।

जज : आर्डर···आर्डर।

(जज की पीठ पर ऐसी जगह खुजली मच जाती है कि वहां उसका हाथ ही नहीं पहुंच रहा है।)

जज : कभी-कभी ऐसी जगह खुजली मच जाती है कि···कमाल है···ज़रा खुजलाना तो।

(कई लोग बढ़ते हैं। सबको मना करके सिर्फ स्त्री को बुलाकर खुजलवाने लगता है।)

जज : नीचे···नीचे···ऊपर···थोड़ा दायें।···बायीं तरफ···ओ-हो थोड़ा नीचे···हां-हां, वहीं···ओ-हो-दायीं तरफ।

(परेशान स्त्री की पीठ से अपनी पीठ रगड़ने लगता है।)

जज : खुजली भी क्या चीज़ है। वाह, मज़ा आ गया !

(स्त्री को चिकोटी काटता है।)

बेशक शादी-शुदा है। हां, तो बताइए, आपका हाजमा ठीक है ?

स्त्री : जी, बिल्कुल।

स० वकील : मतलब, आपका सिर चकराता है ?

जज : मतलब यह कि अब आपको आइसक्रीम की जगह गोलगप्पे पसन्द हैं ? अब आपको मर्दों की हंसी नहीं, बच्चों का शोर अच्छा लगता है ? गीत नहीं, फिल्मी लोरियां पसन्द आती हैं ?

स० वकील : दिन को नींद आती है,···रात-भर जम्हाई आती है ?

पुलिस : जब चलती हैं तो पहले दायां पैर आगे बढ़ता है···या बायां ?

वकील : इन सवालों से असली केस का क्या ताल्लुक ?

जज : वाह-वाह ! अच्छी बात कही।···क्या कहा ?

पुलिस : फिर से कहिए।

वकील : क्या कहा ?

स० वकील : क्या कहा ?

वकील : क्या कहा ?

जज : क्या कहा ?

चपरासी : (पुकारता है) क्या कहा हाज़िर हो ?

जज : बताओ···किसे याद है···इन्होंने क्या कहा ?

चपरासी : हुज़ूर, मैं बताऊं ? इन्होंने ये बात कही, भैंस का दूध गाय के दूध से अच्छा होता है।

डाइरेक्टर : जी नहीं। इन्होंने कुछ असली और नकली चीज़ के बारे में कही थी।

स्त्री : जी नहीं। इन्होंने किसी केस की बात की थी।

युवक : मैं अभी आया, बाथरूम जा रहा हूं।

(जाता है।)

पुलिस : बहुत पीने से लिवर और किडनी खराब हो जाती है। बार-बार बाथरूम जाना पड़ता है।

वकील : 'इक्जैक्टली' मैंने यही कहा था।

स० वकील : मगर इस बात से केस की पैरवी का क्या ताल्लुक ?

वकील : अब याद आया। मी लार्ड, पूछा यह जा रहा था कि इनके पेट में कितने महीने का बच्चा है।

जज : अदालत का काम किसीके पेट में घुसना नहीं है।

चपरासी : 'यस सर, थैंक्यू। मैं भी अंग्रेजी बोल सकता हूं, और नहीं तो क्या ?

जज : आपने अब्दुल्ला को कब देखा ? मतलब वह आपकी शादी में आया था ?

स्त्री : मैंने नहीं देखा।

जज : उसे कब देखा ?

स्त्री : किसे ?

जज : अब्दुल्ला को ?

स्त्री : यह कौन है ?

चपरासी : धत्तेरे की।

स० वकील : अब्दुल्ला···अब्दुल्ला।

स्त्री : ओह अब्दुल्ला···टेलर मास्टर। ऐसा कहिए ना। हां जी, पहले मैं उससे ब्लाउज सिलवाती थी, पर कई साल हो गए, उसे छोड़ दिया।

स० वकील : वजह ?

स्त्री : वह काफी पुराना पड़ गया था। वह ब्लाउज के नाप नहीं ले पाता था।

स० वकील : फिर आप दूसरे टेलर से ब्लाउज सिलवाने लगीं ?

स्त्री : अजी, कहां। वह अब्दुल्ला उस नये टेलर के पास गया। उसे धमकाया, इत्ते तंग ब्लाउज क्यों सिलते हो ? यही चाहते हो, औरतें नंगे पेट-पीठ दिखाती फिरें।

चपरासी : उल्लू कहीं का। उससे क्या मतलब। बताइए भला, परदे में रहते-रहते सड़ गई थीं यहां की औरतें। उसका बदला औरतें जरूर लेंगी। और क्यों न लें, चीजें दिखाने के लिए

बनी हैं, हां नहीं तो।

स्त्री : मुझे दूसरा टेलर भी बदलना पड़ा।···तीसरा और चौथा भी। पांचवें टेलर से भी वह लड़ पड़ा। बोला—इस तरह जवान बेटी-बहुओं के तन-बदन की नाप लेते हुए शरम नहीं आती ? मैंने डांटा—तुझसे मतलब ? वह लड़ पड़ा, बोला—मतलब क्यों नहीं ? मैंने कहा—क्या मतलब ? उसने कहा—शट अप। मैंने कहा—गेट अवे।

जज : यह तो कुछ इश्क का मामला लग रहा है। आप लम्बी-लम्बी सांस लीजिए···मैं सूंघता हूं। चलिए···शुरू कीजिए।

(वह सांस लेती है। जज हवा में सूंघता है।)

जज : ओ हो, नाक में मच्छर घुस गया···अ···क्षी···अ···क्षी।

चपरासी : धत्तेरे की। अ···अ···च्छी !

स्त्री : अजी, मैं उस घनचक्कर से इश्क करूंगी ?

जज : वह तो इश्क कर सकता है।

स्त्री : मुझे उससे नफरत थी।

स० वकील : प्वाइन्ट, मी लार्ड। अब्दुल्ला से इन्हें नफरत थी।

जज : भाई, मुझे बातें करने दो।

स्त्री : आप लोग किस अब्दुल्ला की बातें कर रहे हैं ?

जज : आपका वजन कित्ता है ?

स्त्री : वह अब्दुल्ला कहां है ? वह नाइट गाऊन अच्छा सिलता था।

स० वकील : पूछा जा रहा है, आपका वजन कित्ता है ?

पुरुष : कुछ बता दो···

पुलिस : सिक्सटी किलो।

जज : आर्डर···आर्डर। आपको हंसी क्यों नहीं आई ?

डाइरेक्टर : मुझे हंसी नहीं आती।

जज : क्यों ?

पुलिस : जवाब दो। तुम्हें हंसी क्यों नहीं आती ?

डाइरेक्टर : काफी अरसा हो गया। तब मैं 'क्लेम आफिस' में मामूली-सा क्लर्क था और एक ऐंग्लो-इण्डियन मेम के बंगले के पीछे एक 'सर्वेन्ट क्वार्टर' में रहता था।

स० वकील : अकेले, या फैमिली थी आपकी ?

डाइरेक्टर : फैमिली थी। वह साठ-पैंसठ साल की थी। उसका शौहर मर चुका था। वह अकेली रहती थी। हम उसकी काफी इज्जत और खिदमत करते थे। सुबह-शाम हम उसे 'गुड मार्निंग', 'गुड ईविनिंग' कहते। जब भी उसके सामने पड़ते, आमीन।

जज : ठीक है, ठीक है···सर्वेन्ट क्वार्टर से उसके एक बाथरूम में डेरा जमाया।···फिर ड्राइंग रूम में···फिर बेड रूम··· फिर उसका पूरा बंगला हथियाया।

डाइरेक्टर : मगर यह बहुत पहले की बातें हैं···बहुत पहले।

जज : तो क्लाइमेक्स पर आओ···वक्त नहीं।

डाइरेक्टर : वह बाहर बरामदे में पड़ी दम तोड़ रही थी।

जज : और तुम उसके बक्से···सेफ···ज्वैलरी···के लूटने में लगे थे।

डाइरेक्टर : नहीं···नहीं···नहीं···।

जज : तुम 'बिल' पर दस्तखत कराने में लगे थे।

डाइरेक्टर : हां, तो हुआ यह कि मरते समय वह बुढ़िया मेम हंसने लगी···ही-ही-ही-ही-ई-ई···फिर एक अजनबी आकर मुझसे पूछने लगा···ऐसा क्यों किया ? मेरे मुंह से निकला—मनुष्य धन का गुलाम है। तब उसने कहा—मगर धन किसी का गुलाम नहीं।

जज : शायद वही था अब्दुल्ला।

डाइरेक्टर : ही-ही-ही-ही।

जज : मैं बताऊँगा कब हंसना चाहिए। मुंह बन्द करो।

डाइरेक्टर : तब से मेरी हंसी गायब हो गई। बल्कि यूं कहना चाहिए तब से मुझे यह पता नहीं चलता कि मुझे किस बात पर, कब हंसना चाहिए।

स० वकील : उसके बाद अब्दुल्ला से मुलाकात हुई ?

डाइरेक्टर : मैं नहीं जानता अब्दुल्ला-सब्दुल्ला।

जज : बैंक से ले जाते हुए अपनी ही दौलत पर जब आपने डाका डलवाया···वह कौन था जो आपके बंगले में हंसता हुआ आया था।

डाइरेक्टर : वह कोई पागल था। सड़कों पे ऐसे बहुतेरे घूमते रहते हैं। मेरे दरबान ने उसे धक्का देकर बाहर निकाल दिया।

स० वकील : उसके कत्ल में तुम्हारा हाथ है।

वकील : मुकदमा कभी का खत्म हो गया।

पुरुष : गड़ी हुई लाश को खोदने से क्या मतलब ?

जज : छी छी छी। पिलट करो, पिलट।

(चपरासी पिलट करता है।)

स० वकील : इन सबने कत्ल कर लाश कहीं जमीन में दफना दी है।

वकील : यह गलत है···ऐसा कभी नहीं हुआ।

(एकाएक दायीं-बायीं तरफ शोर उठता है।)

जज : आर्डर, आर्डर। यह कैसा शोर है ?

चपरासी : बात ई है कि सिरिफ यहीं एक मुकदमा तो है नहीं। बीसों मुकदमे हैं आपके इजलास में। जिसकी-जिसकी तारीख है, जाहिर है, सब शोर मचा रहे हैं।

जज : पेशकार से बोलो, और मुकदमों की तारीख डाल दें।

चपरासी : पेशकार साहब अपनी तीसरी कोठी के शिलान्यास के लिए छुट्टी पर हैं। वह अब एक हफ्ते बाद आएंगे। अब वह घूस लेना महापाप समझते हैं।

(फिर वही शोर)

जज : आल राइट, देखता हूं—कहीं से सिर्फ चार फाइलें खींच लो।

(सरकारी वकील और पुलिस मिलकर बड़ी मेहनत से चार फाइलें खींचते हैं।)

पुलिस : सरकार बनाम डाक्टर हरीकृष्ण भारद्वाज, हाउस सर्जन पी० एम० टी० हास्पिटल···।

स० वकील : 'सर, दिस इज़ दि फेमस रेप केस'···हास्पिटल में दाखिल एक बीमार जवान लड़की के साथ डाक्टर ने बलात्कार किया। दफा ताजिरात हिन्द···

वकील : 'माई लार्ड दिस इज़ बेसलेस'। दरअसल यह मामला पोलिटिकल है। डाक्टर भारद्वाज अपने चरित्र और असूलों से पक्के राष्ट्रवादी रहे हैं। और इस वक्त पी० एम० टी० हास्पिटल विरोधी पार्टी के शासन में चला गया है, चुनांचे डाक्टर भारद्वाज के खिलाफ यह साज़िश की गयी है।

स० वकील : परवीन टंडन का कत्ल उसके शौहर ने सोहागरात को किया। पोस्टमार्टम और पुलिस की रिपोर्ट है।

पुलिस : रिपोर्ट मुझे पढ़ने दीजिए।

पुरुष : मुझे बयान देने दीजिए।

डाइरेक्टर : मुझे सफाई देने दीजिए।

युवक : परवीन टंडन के शौहर को कहने दीजिए।

जज : आर्डर, आर्डर! मुझे सुनने दीजिए। केस पढ़िए परवीन टंडन का।

स० वकील : 'मीरचंदानी एंड को०' से उन्नीस सौ इकहत्तर के जनरल इलेक्शन में कुल तैंतीस लाख चन्दा लिया गया—अब उस पर मुकदमा चलाया जा रहा है—उसके पास इत्ता धन कहां से आया?

जज : परवीन टंडन का केस कहां गया।

पुलिस : 'पोलिटिकल प्रेशर' की वजह से आपके इजलास से खिसक कर, बायें से दायें चला गया। वहां से ऊपर उड़ गया, ऊपर से नीचे गिर गया। और नीचे से फुर्र हो गया!

जज : अमां, इत्ती देर में?

स० वकील : माई लार्ड, इत्ती देर में पृथ्वी सूरज के चारों ओर तैंतीस किलोमीटर घूम चुकी।

पुरुष : इत्ती देर में इस पृथ्वी पर तैंतीस लाख बच्चे पैदा हो गए।

युवक : इत्ती देर में इस मुल्क में दो करोड़ तैंतीस लाख 'ह्वाइट मनी' 'ब्लैक मनी' हो गया और इतने ही नौजवान बेकारी में सड़क पर घूमने लगे।

पुलिस : माई लार्ड, इत्ती देर में इस शहर में तैंतीस बलात्कार, तेरह 'मरडर', बत्तीस दुर्घटनाएं और सोलह आत्म-हत्याएं हो गयीं।

जज : सरकारी वकील जवाब दें—वजह क्या है? क्यों, 'व्हाई'?

स० वकील : मी लार्ड, इस सी० आई० ए० मसले पर मुझे बहस करने का मौका दिया जाए।

जज : आर्डर! इट इज़ सी० आई० ए० टू प्रूव दैट इट इज़ सी० आई० ए०। आई डिक्लेयर टू एडजार्न दी कोर्ट फॉर कॉफी ब्रेक!

(प्रकाश बुझता है। 'इंटरवल' के बाद जब मंच पर प्रकाश आता है—वही अदालत का दृश्य है)

जज : आप लोगों ने काफी, चाय-शाय पी ली। सिगरेट वगैरह फूंककर पीठ पीछे एक-दूसरे को गालियां दे लां। ठीक, इससे सेहत पर बेहतर असर पड़ता है। तो हम फिर उसी 'अब्दुल्ला मरडर केस' पर आते हैं। हाज़रीन, खुसफुस-खुसफुस बंद कीजिए।

युवक : कहता हूं—यह मुकदमा बंद कीजिए।

स्त्री : बेटे, ऐसा नहीं बोलते।

युवक : हां, माई डियर ममी-इन-लॉ बेटे लोग हरिकीर्तन करते हैं ···हेरी कृष्णा हेरी रामा।

पुरुष : सनी, खबरदार।

युवक : डैडी, खबरदार।

चपरासी : वाह बेटा, जमा रह। शाबाश, ये बड़े घरों के लौंडों के चोंचले हैं, सोचिए, मेरा लड़का ऐसा क्यों न हुआ?

पुलिस : जेल की हवा खानी पड़ेगी, बेटा।

युवक : जेल की हवा खानी पड़ेगी, मामा।

जज : आर्डर···आर्डर···यह बड़ा 'डोमैस्टिक' झगड़ा लग रहा है।

स० वकील : उस कत्ल का यह है गवाह।

युवक : बीटिल और पॉप म्यूज़िक के शोर में मरजुआना के धुएं के नीचे हेरी कृष्णा हेरी रामा।

पुरुष : नहीं, नहीं। यह ऐसे ही बक रहा है। बड़ा शरीफ है।

वकील : यह महज़ बातें करता है।

स्त्री : कितना अच्छा है।

पुलिस : यह बदमाश है हुजूर! इस पर अलग से 'पब्लिक न्यूसेंस' का केस भी चल रहा है।

जज : यह शादीशुदा है?

डाइरेक्टर : सुनिए···फिर वही शादी का सवाल। मैंने क्या कहा था? इसे बस उसी शादी का झक है।

पुरुष : जी हां, जी, शादी हो चुकी है।

जज : किसकी?

पुरुष : किसकी?

जज : यह हंसने का प्वाइंट है, हंसो।

(डाइरेक्टर बनावटी हंसी हंसने लगता है।)

जज : अरे, आप क्या कर रहे हैं?

डाइरेक्टर : जनाब, मैं हंस रहा हूं।

पुरुष : जी हां, यह शादीशुदा है।

वकील : शादी कब को हो चुकी है।

जज : कहां है इसकी बीवी, हाज़िर करो।

पुरुष : जी हां, हाज़िर है।

स० वकील : मगर वह कहां है?

(चपरासी आवाज़ें दे रहा है।)

युवक : उसके साथ मेरी मुलाकात हो गई। मतलब किसी के साथ

जैसे मुलाकात हो जाती है या मुलाकात करा दी जाती है। हम एक-दूसरे को अच्छे नहीं लगे। लेकिन बुरा भी क्या था? 'चेंज' और तफरीह के लिए अच्छे-बुरे का सवाल नहीं उठता। मेरे पास हज़ारों रुपये 'पाकेट मनी'। डैडी कहते 'ब्लैक मनी जलाकर रोशनी करो'। मेरे पास कारें, लड़कियां और मेरा अकेलापन, जी हां, धन-दौलत और लड़कियों के साथ अकेलापन। अकेलापन का वह अल्फाज मुझे एक फ्रेंच हिप्पी लड़की से मिला। मेरे भीतर अकेलापन का अजीब अहसास। मुझे डर लगता, वह अकेलापन भी कहीं मुझसे न छूट जाए। फिर मैं क्या करता। वही लड़की मेरे सामने। डैडी ने कहा, 'सनी, शादी कर इससे।' मगर उस लड़की ने कहा, 'मैं शादी एक गांव वाले भुच्च देहाती से करूंगी।' मैंने कहा, 'यह क्या?' उसने कहा, 'विद्रोह, प्रयोग'···मैंने कहा, हेरी कृष्णा हेरी रामा।

(दृश्य से प्रकाश बुझकर सामने उभरता है। युवती आती है।)

युवक : कहां हो जी! ओ जी! फिर मैं जा रही हूं, हां···।

(डाइरेक्टर आता है।)

डाइरेक्टर : आ रहा है···बैठो, देहाती बनने की प्रैक्टिस कर रहा है, प्रैक्टिस!

युवती : गांव की बोली बोलने लगा?

डाइरेक्टर : फटाफट···।

युवती : देहाती गालियां बकता है?

डाइरेक्टर : सोनी···सोनी!

युवती : वंडरफुल!···कपड़े?

डाइरेक्टर : कपड़े भी देहाती···चाल-चलन भी!

युवती : बुलाओ···बुलाओ···।

(देहाती वस्त्रों में युवक भीतर से निकलकर भागता है। पुरुष और स्त्री पीछा कर रहे हैं। सब युवक

को घेरकर पकड़ लेते हैं।)

पुरुष : यह रहा देहाती दूल्हा।

स्त्री : अब इधर देख।

युवती : आप लोग जाइए।

युवक : नहीं, यह मुझे मारेगी।

पुरुष : घबड़ा नहीं, हिम्मत से काम ले।

स्त्री : उस फिल्म का देहाती हीरो जैसे शहर की हीरोइन के साथ करता है ना, वैसे ही···वैसे ही, हां···।

डाइरेक्टर : डरता क्यों है ? हाथ-पैर से काम ले फटाफट।

पुरुष : चल, हल चला···

युवती : हल चलाता है ?

पुरुष : अजी यह हाथ-पैर, ज़बान भी चलाता है।

युवक : (सहसा) 'शट-अप !' मैं यह सब चक्कर नहीं कर सकता। भाग जाओ यहां से !

युवती : अयं, यह क्या ?

पुरुष : मज़ाक कर रहा है···बड़ा मजाकिया हो गया है।

स्त्री : ऐसे ही झट रूप बदल लेता है।

डाइरेक्टर : चलो, अन्दर दिखाएं क्या-क्या देहाती कपड़े, चीजें।

स्त्री : हां, हां, आओ कुछ चाय-शाय पियो।

(युवती को दोनों भीतर खींच ले जाते हैं।)

[विराम]

पुरुष : ज़िन्दगी में कोई एक काम तो पूरा कर।

युवक : नहीं कर रहा ?···

पुरुष : मेरी दौलत फूंकने के अलावा और क्या कर रहा है ?

युवक : खुद को फूंककर जो जला रहा हूं।

पुरुष : यह कोई काम नहीं।

युवक : कुछ नहीं करना भी एक काम है।

पुरुष : काम वह है जिससे कोई फायदा हो।

युवक : काम वह है जिसमें कोई फायदा-नुकसान न हो !

पुरुष : वाह बेटा ! मुझे गीता प्रवचन देगा ! उसका अधिकारी केवल मैं हूं।

युवक : मुझे इस लड़की से कुछ लेना-देना नहीं।

पुरुष : अबे, यह जज की इकलौती लड़की है।

युवक : तो मैं भी इकलौता लड़का हूं।

पुरुष : किसका ?

युवक : पता नहीं !

पुरुष : देख···सुन···। जैसे मैंने उस औरत से शादी की···वैसे तुझे इस लड़की से शादी करनी है।

युवक : लेकिन वह शादी नहीं, 'एक्सपेरिमेन्ट' कर रही है।

पुरुष : तो हम कौन शादी कर रहे हैं। समझता क्यों नहीं—यह बेगानी शादी।

युवक : 'ह्वाट' बेगानी शादी ?

पुरुष : दूसरे की शादी।

युवक : दूसरे···की···शादी ?

पुरुष : जिससे शादी करने वाले का कोई मतलब न हो।

युवक : फिर मतलब क्या है ?

पुरुष : यही तो मतलब है। मुकदमे से छूट जाना।

युवक : मैं मुकदमे में नहीं फंसा हूं।

पुरुष : बेटे, हम सब कतल में फंसे हैं।

युवक : कैसा कतल ?

पुरुष : यह तो नहीं मालूम।

युवक : मुझे कुछ नहीं मालूम।

पुरुष : शीऽऽ, धीरे-धीरे बोल।

युवक : वह लड़की कौन है ?

पुरुष : उसी जज की लड़की !

युवक : उसके साथ मेरा सब कुछ हो चुका है।

पुरुष : मगर शादी नहीं हुई है।

युवक : वह देहाती गंवड़िये से शादी करना क्यों चाहती है ?

पुरुष : बकवास बन्द करता है या नहीं ?
युवक : तू बकवास बन्द करता है या नहीं ?
पुरुष : मैं तेरा बाप हूं।
युवक : मैं तेरा बाप हूं।
पुरुष : शीऽऽ, मैं तेरा बाप हूं।
युवक : इसका सबूत ?
पुरुष : मज़ाक बन्द कर, वरना जेल की हवा खाएगा।
युवक : मज़ा रहेगा, डैडी।
पुरुष : देख, तूने मुझे डैडी कहा।
युवक : वह तो आदत हो गई है।
पुरुष : जल्दी कर, वरना मैं होश ठीक कर दूंगा।
युवक : फिर एल० एस० डी० खा लूंगा।
पुरुष : मैं तेरा सिर तोड़ दूंगा।
युवक : मज़ा आ जाएगा।
पुरुष : देख, मैं तेरे हाथ जोड़ता हूं। कहे तो पैरों पर गिर जाऊं। तू समझता क्यों नहीं ?
युवक : डैडी, आप ही उससे शादी क्यों नहीं कर लेते ?
पुरुष : मैं !
युवक : आप तो कुछ भी बन सकते हैं···देहाती···जानवर···बन-मानुष। हा···हा···हा।
पुरुष : काम बनता तो ऐसी बीसियों शादी कर लेता। वह आ रही है।
युवक : अगर वह शादी में 'एक्सपेरिमेन्ट' करना चाहती है, तो मैं भी 'एक्सपेरिमेन्ट' कर सकता हूं। मैं भी एक देहाती अन-पढ़ गंवार लड़की से शादी करूंगा।
पुरुष : मैं तुझे अपने घर से निकाल दूंगा।
युवक : जा रहा हूं।
पुरुष : सुन-सुन। मैं किसी और के नाम अपनी सारी धन-दौलत 'विल' कर दूंगा, भूखों मर जाओगे।

युवक : हरामी।
पुरुष : हरामी; के बच्चे ! जल्दी कर···जल्दी। मेरे पास इत्ता वक्त नहीं।
युवक : मेरे पास है।
पुरुष : तेरे पास कुछ नहीं है।
युवक : 'मर्डर', 'हत्या', 'कत्ल' अब्दुल्ला का ! हा···हा···हा।

(पुरुष युवक को पकड़कर मुंह दबोच लेता है। भीतर से युवती आती है। संग में डाइरेक्टर और स्त्री है।)

युवती : यह क्या ?
डाइरेक्टर : गांव में जैसे होता है न।
स्त्री : दोनों गांव वाले, ही-ही-ही !
पुरुष : ले यह डंडा और चला हल ! खबरदार···।

(पुरुष के संग स्त्री और डाइरेक्टर भीतर जाते हैं।)

युवती : हाय ! कित्ते अच्छे लग रहे हो।
युवक : चुप्प रह ससुरी।
युवती : ओह ! हाऊ स्वीट !
युवक : साली, ऊ डंडा मारूं कि···चल मेरे पीछे···ही-ही का करती है ?
युवती : और गाली दो मुझे। 'आई लाइक इट' !

(मारने दौड़ता है। युवती हंसती हुई भागती है।)

युवती : अच्छा, एक गाना सुनाओ !
युवक : तू सुना। मैं हल जोतूं···ता-ता-त-ता···ओ-ओ-ओ-त-ता-त-ता-त-ता···।
युवती : (भागती है) यह क्या करते हो ?
युवक : (गा पड़ता है।)
युवती : इसे अंग्रेजी में 'ट्रांस्लेट' करो।
युवक : 'ट्रांस्लेट' करेगा मेरा यही डंडा !

युवती : (डंडा छीन लेती है।) अब बोल !

(भीतर से पुरुष दौड़ता है।)

युवक : देख साले, यह मुझे मारती है। हें-हें-हें !

पुरुष : बंद कर रोना।

युवती : यह आपको गाली देता है···

युवक : 'इट इज़ इज़ी टु कम्यूनिकेट, मैन !'

युवती : देखिए, यह फिर देहाती ज़बान नहीं बोल रहा है।··· दरअसल मैं चाहती हूं यह मुझे मारे, खूब मारे···भद्दी से भद्दी गालियां दे, 'बट ही इज़ ब्लडी कावर्ड।'

पुरुष : दरअसल हमारा खानदान बहुत ऊंचा है। हमारे यहां कभी किसी कुत्ते-बिल्ली को भी गाली नहीं दी गई।

युवक : हम आपस में गाली-गलौज करते हैं।

(पुरुष शून्य में कुछ लिखने लगता है।)

युवती : यह क्या ?

युवक : साला हवा में अपनी 'बायोग्राफी' लिख रहा है।

पुरुष : मेरे पिता के पिता के पिता दीवान थे।

युवक : दीवाना थे।

पुरुष : तू क्या बीच में बोलता है ?

युवक : तेरा लाउडस्पीकर हूं, डैडी।

पुरुष : मेरे बाबा के घर में एक बहुत बड़ा किला था।

युवक : किला ही घर था।

पुरुष : पिता के पिता राजा थे।

युवक : बैंड बाजा थे।

पुरुष : चुप बे !

युवक : चुप बे !

पुरुष : मेरे पिता मजिस्ट्रेट थे।

युवक : ऊंट थे।

पुरुष : देखा बेटी, अब यह काफी देहाती हो चुका है, अब फटाफट शादी···शादी का सारा इन्तजाम पूरा है।

युवती : मगर यह अभी अधूरा है।

पुरुष : पर गांठ का पूरा है। इसके नाम दो-दो कोठियां हैं। लाखों रुपये हैं इसके नाम। दो-दो गाड़ियां हैं···इम्पाला और मर्सडीज़। तुम दोनों की शादी में उपराष्ट्रपति आएंगे। फिल्म स्टारों की कतार लगी होगी। सारे अखबारों में फोटुएं छपेंगी। हनीमून के लिए तुम दोनों चाहे पेरिस जाओ चाहे होनोलूलू···चाहे मून में हनी···चाहे हनी में मून। परमात्मा ने हमको सब कुछ दिया है।

युवती : यह परमात्मा क्या चीज़ है ?

पुरुष : परमात्मा···परमात्मा !

युवक : परमात्मा मेरी मां का नाम था।

पुरुष : सही कहता है।

युवक : मेरी मां की मृत्यु के बाद ही इसे एक सेठानी मिली। फिर एक विधवा बंगालन, फिर वही कांड़ी···फिर वही लंगड़ा अहलुवालिया। ईंट का भट्टा···सरकारी कांट्रैक्ट ···फाइनेंस कम्पनी। दीवालिया। मोटर पार्ट्स। पांच किलो सोना। यू० ए० आर० से स्मगलिंग···नेपाल से अफीम इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट। आठ कत्ल···सोलह 'एबार्शन', तीन बार 'अंडर ग्राउण्ड', सात बार फरार···।

(युवक बोलता हुआ भाग रहा है, पुरुष डंडा लिए उसे खदेड़ रहा है।)

युवक : ही-ही-ही···किस्सा तोता-मैना। किस्सा समाजवाद उर्फ अरेबियन नाइट्स, किस्सा गरीबी हटाओ उर्फ अलिफ-लैला। 'फेयरी टेल'···'फेयरी टेल'।

पुरुष : 'फेयरी टेल, फेयरी टेल'।

युवती : (हंस रही है।)

युवक : ई ससुरी हमरे मान की नहीं।

पुरुष : क्या कहा ?

युवक : इसे जानवर चाहिए, जो मेरा डैडी है !

युवती : 'यस, यस, आइ वांट वलगैरिटी' !

पुरुष : इसके लिए पहले शादी जरूरी है।

युवती : 'आई एम नाट इन्टरेस्टेड इन शादी'।

पुरुष : लेकिन मेरा 'सनी' तो देहाती बन गया।

युवक : हई···हई···त-ता-त-ता !

युवती : सिर्फ देहाती बनने से क्या होता है। मुझे जानवर चाहिए, जानवर !

(युवक गधे की बोली बोलता हुआ भागता है ···युवती पीछा करती है। भीतर से स्त्री और डाइरेक्टर आते हैं।)

पुरुष : अब शादी हो जाएगी।

डाइरेक्टर : शादी का सारा इन्तज़ाम तैयार है।

स्त्री : सारी चीजें तैयार हैं···'नान वेजीटेरियन' मुर्ग-मुसल्लम और चिकेन कोफ्ते, 'वेजीटेरियन' में भिंडी, करेले, आलू-मटर।

डाइरेक्टर : शादी का मौसम भी अच्छा है। न आसमान में बादल, न हवा में गुर्दोगुबार। न ज्यादा सर्दी, न गर्मी।

पुरुष : अब ठाठ से कहूंगा अदालत में···मी लार्ड, मेम्बर्स आफ जूरी। मेरे बेटे की शादी हो चुकी है। आप चाहे इसे प्रेम-विवाह कहें, चाहे प्रयोगवादी, चाहे सनातन धर्म की ···सारे बाराती घोड़े पर सवार थे। आगे-आगे मिलिट्री के तीनों बैंड बज रहे थे। झांकियां चल रही थीं। आसमान में हवाई जहाज़ कतारों में उड़ रहे थे।

डाइरेक्टर : भाई साहब, यह रिहर्सल का वक्त नहीं, मेहमान आने लगे।

पुरुष : ओह, आइए, आइए···तशरीफ रखिये। ओह देवानन्द जी, आइए, आइए···राज कपूर साहब···(अदृश्य बारातियों का स्वागत) आइए पटौदी साहब·····मेहरबानी····· थैंक्यू···।

डाइरेक्टर : (अदृश्य बारातियों का स्वागत) आइए शर्माजी···ओह थैंक्यू, खन्ना साहब···आइए, इधर से आइए।

स्त्री : (स्वागत) आइए, मिसेज़ राय···ओह, मिसेज़ सिंह, आइए।

पुरुष : भाइयो···दोस्तो···मेरे अजीज़ मेहमान···नो···नो··· नो···पहले काकटेल फिर डिनर···। नो, नो, वेरी सारी ···नो टी, नो साफ्ट ड्रिंक्स···'काकटेल'। देखिए औरतों के लिए 'शैम्पेन'। थैंक्यू वेरी मच।

डाइरेक्टर : इधर से···प्लीज़···इधर !

स्त्री : ओह, 'नाइस टू सी यू'···

पुरुष : आइए···इधर आइए···

(जैसे मेहमानों को लिए हुए तीनों अन्दर चले जाते हैं। कुछ ही क्षणों बाद बाहर से युवक दौड़ा आता है, डैडी को पुकारता हुआ। भीतर से पुरुष का प्रवेश।)

पुरुष : सारे मेहमान आ चुके हैं···तेरी शादी की तैयारी पूरी हो चुकी है।

युवक : उसके सिर पर सींग निकल आया है।

पुरुष : किसके ?

युवक : उसके !

पुरुष : ओह, तू उसे सींग कहता है ?

युवक : यहां नहीं, यहां ! वह सचमुच जानवर हो जाना चाहती है, जैसे तुम···।

पुरुष : कहां हैं मेरे सींग ?

युवक : कुछ जानवरों के सींग नहीं होते।

पुरुष : कहां है ?

युवक : वह आ रही है !

पुरुष : मुझे दे अपने कपड़े !

(युवक के कपड़े अपने सिर बांधता है। युवती आती

है। पुरुष और युवती में जैसे कोई खेल शुरू होता है। पुरुष उसे बांध लेने के लिए झपटता है। वह बच निकलती है। वह फिर आकर्षण देती है। पुरुष उसे बांहों में दबोच लेता है। युवती हंसती हुई अंदर भागती है, पुरुष उसका पीछा करता है। (नृत्य-नाटक जैसा दृश्य।)

युवक : जानवर ! जानवर !

स्त्री : (दौड़ी आती है।) मैंने भी देखा इत्ता बड़ा जानवर कोठी में घुस आया है।

युवक : वह बारह फुट लंबी हो गई !

स्त्री : वह सोलह फुट लंबा हो गया।

युवक : उसके इत्ते बड़े-बड़े हाथ।

स्त्री : उसके सारे बदन पर सींग जम आए।

युवक : उसके दस पैर !

स्त्री : दस मुंह।

युवक : जैसे नंगा पेड़।

स्त्री : जैसे नंगा पहाड़।

युवक : खून···खून···बलात्कार।

स्त्री : ऐसा उसने बहू के साथ किया।

युवक : जानवर···एनिमल···जानवर···रिनोसरस···

(डाइरेक्टर का प्रवेश।)

डाइरेक्टर : तो क्या हुआ ? उन्होंने निष्काम भाव से काम किया।

युवक : जानवर !

स्त्री : 'एनीमल'।

डाइरेक्टर : शीऽऽ···वह गीता पाठ कर रहे हैं।

युवक : उसका गला घोंट दूंगा।

स्त्री : वह लड़की अब तक वहां बेहोश पड़ी है ?

डाइरेक्टर : वहां अब कोई नहीं। शादी हो गई।

युवक : वह पागल क्यों नहीं हुआ ?

डाइरेक्टर : अगर उसकी जरूरत पड़ी तो हो जाएंगे। रुको, कहां जा रहे हो ?

युवक : मत छूओ मुझे !

(युवक जाता है।)

डाइरेक्टर : आप तो उसकी धर्मपत्नी हैं। आपको साथ देना होगा।

स्त्री : मेरे धर्मपति ने ऐसा शर्मनाक काम किया···मुझे रुलाई क्यों नहीं आ रही है ?

डाइरेक्टर : यह रूमाल नाक पर रखकर थोड़ा यूं ही रो लीजिए···जी हल्का हो जाएगा।

(स्त्री उसी तरह रोती है। डाइरेक्टर भी थोड़ी मदद करता है। स्त्री सिसकती हुई अन्दर चली जाती है। भीतर से पागलों की तरह बड़बड़ाता हुआ पुरुष आता है।)

पुरुष : कुड़-कुड़-कुड़-कुड़···धड़ाम-धड़ाम। कुड़-कुड़-कुड़-कुड़-धड़ाम-धड़ाम !

डाइरेक्टर : भाई साहब ! भाई साहब !

पुरुष : मैंने सब कुछ सुन लिया है···थोड़ा पागल होना पड़ेगा कुड़-कुड़···

डाइरेक्टर : लेकिन आप यह कबूल ही क्यों करें कि आपने ऐसा कुछ किया !

पुरुष : आज, उन दोनों ने देख लिया है···उनकी आत्मा की शांति के लिए···कुड़-कुड़-कुड़-धड़ाम !

डाइरेक्टर : भाई साहब !

पुरुष : कुड़-कुड़-कुड़-कुड़-धड़ाम !

डाइरेक्टर : मगर, सुनिए तो।

पुरुष : वे दोनों कहां हैं ?

(स्त्री रोती हुई अन्दर से आती है।)

पुरुष : कुड़-कुड़-धड़ाम !

स्त्री : यह क्या ?

डाइरेक्टर : पागल हो गए। 'शॉक' लगा है उसी का।

(स्त्री और तेज रोने का अभिनय करती है)

पुरुष : कुड़-कुड़-धड़ाम···कुड़-कुड़-धड़ाम !

डाइरेक्टर : यह लीजिए दूसरा रूमाल।

स्त्री : (लेकर नाक साफ करती है) शादी हो गई ?

पुरुष : हो गई। विदा करो मेहमानों को !

स्त्री : अब कैसी है तबीयत ?

पुरुष : अब तुम्हारी कैसी है ?

स्त्री : हटो जी, तुमने उसके साथ ऐसा क्यों किया ?

पुरुष : चलो, मेहमानों को पहले विदा करो।

(दोनों जाते हैं।)

डाइरेक्टर : (जैसे माइक हाथ में लिए हुए) डी० एल० वी० वन सिक्स डबल टू। डब्लू०वी०एस० थ्री टू सेविन···खोसला साहब का ड्राइवर दरवाजे पर गाड़ी लाएगा। डी० एल० जेड० मर्सडीज़ डबल टू फोर सिक्स···पीछे के दरवाजे पर। सी० डी० डबल फाइव बाएं फाटक पर। डी० एल० क्यू० स्टाफ कार का ड्राइवर भीतर जाकर अपने मालिक को उठाकर गाड़ी में डालकर ले जायेगा···

(प्रकाश बुझकर फिर उसी अदालत के दृश्य पर उभरता है।)

जज : इस शादी में अब्दुल्ला आया था ?

स०वकील : तूने देखा था ?

वकील : भला दूल्हा कहां से देखेगा ?

स०वकील : शादी में कितने लोग आए थे ?

पुरुष : असंख्य···। वकील साहब, साहब को शादी के अलबम पेश करो।

डाइरेक्टर : हूजूर, उसकी 'मूवी' भी बन चुकी है।

पुरुष : वह एक आदर्श शादी थी।

जज : आर्डर ! यहां 'आदर्श', 'मर्यादा' जैसे मुश्किल अल्फाज

नहीं चलेंगे।

स०वकील : उस शादी के बाद आपके इस लड़के ने आपसे बोलचाल क्यों बंद कर दी ?

पुरुष : इसकी शादी में मुझे 'एनिमल थाइसिस' 'अटैक' हुआ। डाक्टर की सलाह थी, यह मुझसे बोले-चाले नहीं।

युवक : यह जानवर है।

पुरुष : तब से यह मुझसे सिर्फ मजाक करता है।

(हंसने लगता है।)

जज : आर्डर, आर्डर ! अब्दुल्ला कहां था उस शादी में ?

पुरुष : कमाल है, एक ओर अब्दुल्ला के कत्ल का मुकदमा चल रहा है, दूसरी ओर यह पूछा जा रहा है, अब्दुल्ला कहां था शादी में ?

स० वकील : जो पूछा जा रहा है उसका जवाब दीजिए।

चपरासी : कुछ लोग मर कर भी ज़िंदा रहते हैं···कुछ तो मरते ही नहीं।

वकील : अब्दुल्ला मरा है या ज़िंदा है, मैं जानना चाहता हूं। यह किसी को चिन्ता है ? यह तकलीफ किसे है ? क्यों है ? हुजूर, मुझे यह कहने की इजाज़त दीजिए, यह उन लोगों की महज़ दिमागी ऐयाशी है, जिनके पास और कोई बुनियादी मसले नहीं हैं। मैं पूछता हूं, आज किसे फुर्सत है सड़क पर उस कुचलकर मरे हुए कुत्ते को रुककर देखना, जिसकी मौत आखिर लाज़मी थी ?

स० वकील : हुजूर, गौर कीजिए, अब्दुल्ला की तुलना कुचलकर मरे हुए कुत्ते से की जा रही है।

डाइरेक्टर : सही की जा रही है।

स० वकील : आप उसकी मानहानि नहीं कर सकते।

डाइरेक्टर : जब वह इतना बड़ा वी० आई० पी० था और उसकी मौत का इत्ता खतरा था तो सरकार को, पुलिस से उसकी हिफाज़त करानी थी। हमारे नेता, अफसर, स्कूल-कालेज-

यूनिवर्सिटी के संचालक, बड़े-बड़ महात्मा कहां थे ?

चपरासी : बिल्कुल ठीक कहता है। आज चले हैं उसकी लाश खोदने और मुल्जिम पकड़ने।

स० वकील : मैं ज़ोर देकर कहता हूं···।

जज : देखिए, ज्यादा ज़ोर मत दीजिए।···

स० वकील : बिना अब्दुल्ला के हमारी ज़िंदगी खतरे में है।

पुरुष : हुजूर, कुछ मुझे भी बोलने की इजाज़त ···। हाज़रीन, दिल पर हाथ रख लीजिए, मैं एक सच बोलने जा रहा हूं।

जज : नहीं नहीं···पेट पर ज़ोर पड़ेगा।

पुरुष : खतरा अब्दुल्ला के होने न होने से नहीं है। खतरा है उसकी बातें करने से। क्यों ? मैं बताता हूं। हमारी आज की इतनी बेचैनी, चाहे वह किसी की मौत से हो या चाहे जनम से, यह उस बेकार पुरानी आत्मा की बेचैनी है, जिसका साला रहा होगा अब्दुल्ला।

जज : क्या कहा ?

चपरासी : साला ?

पुरुष : नहीं, नहीं। बेटा ? नहीं, जननी।

जज : यह हंसने का प्वाइन्ट है ?

(जज के साथ डाइरेक्टर हंसने का प्रयत्न करता है।)

वकील : मेरा ख्याल है, अब्दुल्ला किसी एक बीमारी का नाम है। मगर उससे मेरा कभी कोई ताल्लुक नहीं हुआ, हां···।

युवक : अब्दुल्ला सनकी और अजूबा रहा होगा, या इसकी तरह जानवर।

पुरुष : सनी !

डाइरेक्टर : शैतान को एक बार पकड़ लेता तो···।

युवक : हमने कभी उसका नाम तक नहीं सुना।

पुरुष : उसका कोई फोटोग्राफ है ?

वकील : या ऑटोग्राफ है ?

युवक : ऐसा कोई नक्शा, जिसके सहारे उसे ढूंढ़ने की कोशिश की जाए।

पुलिस : हमारे पास महज़ अपने शहर का नक्शा है—सड़कें, गलियां, सुरंग, पुल···।

जज : कुछ मालूम भी है ? अंधे लड़के महज़ छूकर जान सकते हैं।

वकील : आजकल अस्पतालों में जितने बच्चे पैदा होते हैं, उनके गले में पहचान के लिए नंबर लटका दिए जाते हैं। फिर उन्हीं नंबरों के मुताबिक उनकी ज़िन्दगी शुरू होती है। वही नंबरों वाली पढ़ाई, वही रटी-रटाई बातें···वही फिल्में ···वही अखबार···वही प्रेम···वही मकान। तो इस भीड़ में किसी एक विशेष की ज़िन्दगी और मौत की खोज करना सच्चाई के साथ 'फ्लर्टेशन' है।

जज : आर्डर···आर्डर···

युवक : 'यस, वी आर फ्लर्टिंग विद इरेलिवेंट, अगर।' इस वक्त कोई 'रेलिवेंट' है, तो यह, मेरा डैडी।

जज : क्यों, डैडी साहब ?

पुरुष : हुजूर, यह मज़ाक कर रहा है।

युवक : इसके लिए सब कुछ मज़ाक है। मैं बताता हूं।

पुरुष : मैं बताता हूं···

(युवक और पुरुष में झपट होती है। पुलिस बचाने दौड़ता है।)

स० वकील : वह किसकी तरफ था ? दूल्हा की ओर या दुल्हन की ओर ?

वकील : मी लार्ड, सरकारी वकील खामखा ऐसे सवालात कर रहे हैं जिनका इस केस से कोई ताल्लुक नहीं।

स० वकील : मी लार्ड, मुझे जिरह करने की इजाज़त दी जाए, और यह देखा जाए, जब तक मैं मुल्जिम से सीधे जिरह कर रहा

हूं, यह बीच में खामखा टांग न अड़ाएं।

जज : टांग अड़ा सकते हैं, मगर टांगें खूबसूरत हों। हां, ज़बान न लड़ाए। आगे बढ़िए। मतलब अपनी-अपनी टांगें दिखाओ ···सिर्फ टांगें···बस।

स० वकील : उसे किस तरफ देखा ?

युवक : मतलब ?

स० वकील : वह बराती था या घराती ?

युवक : 'आई डोन्ट नो योर ब्लडी लैंग्वेज।'

पुरुष : सनी।

स० वकील : वह किस हालत में था ? क्या पहने था ? किसके साथ था ?

युवक : उस वक्त मैं एल० एस० डी० के नशे में था।

चपरासी : यह क्या है, भइया ? एक खुराक मुझे भी।

स० वकील : मी लार्ड, 'प्वाइन्ट'। यह एल० एस० डी० खाता है।

जज : अयं ! यह क्या चीज़ है। यार, मुझे भी दिखाओ कम से कम, हां।

स० वकील : एक निहायत ज़हरीला नशा।

जज : चपरासी, सारे कुत्तों को एल० एस० डी० खिलाओ।

डाइरेक्टर : हुज़ूर, यह काफी महंगी चीज़ है, 'मेड इन अमेरिका।'

जज : फोर्ड फाउन्डेशन हमारी मदद करेगा।

(डाइरेक्टर हंसने लगता है।)

जज : अरे रे रे···यह हंसने की जगह नहीं।

(चपरासी हंस पड़ता है।)

जज : अरे, तू, क्यों हंस रहा है ?···इसकी बीवी किधर है ? अब तक हाज़िर नहीं की गई।

वकील : पुलिस उसकी तलाश में है।

स० वकील : मी लार्ड, वह फरार है।

पुरुष : जी नहीं, उसकी तबियत खराब है। वकील साहब, उसका मेडिकल सर्टीफिकेट दिखाओ।

वकील : 'मी लार्ड, शी इज़ इन फेमिली वे'।

स० वकील : यह शादी इसी मुकदमे के दौरान की गई।

वकील : गलत। इस मुकदमे से तीन महीने तेरह दिन पहले।

स्त्री : जी हां, मैं गवाह हूं।

पुरुष : मैं भी गवाह हूं।

जज : और कौन है ?

चपरासी : मैं भी।···हां नहीं तो, मैं सबका गवाह हूं, गवाह होने में फायदा ही फायदा है। हां, और क्या।

पुरुष : उसके बाद मैंने अब्दुल्ला को नहीं देखा।

स० वकील : उसका कत्ल किया गया।

युवक : नहीं, वह ज़िन्दा है।

जज : क्या कहा ?

(लोग परस्पर बातें करने लगते हैं।)

चपरासी : जी हां, पहले वह तिरंगे कपड़े पहनता था···फिर लाल, सफेद, फिर काला, फिर लाल, फिर पीला और गेरुआ। फिर आने लगा, जाने लगा—आए राम गए राम। कहने लगा एक ही रंग का कपड़ा मैं रोज़-रोज़ नहीं पहनूंगा। फिर वह हर रोज़ रंग बदलने लगा। जी हां, रोज़ !

स० वकील : मी लार्ड, मेम्बर्स आफ जूरी। अब्दुल्ला का कत्ल हुआ है। वह अब नहीं है। उसकी लाश इन सबने मिलकर गायब कर दी है। इनके बयान झूठे हैं। मी लार्ड, मेम्बर्स आफ जूरी, सुनिए। यह गौर करने की बात है। मेरा गला सूख रहा है। मैं कहना चाहता हूं, इन सबने मिलकर साज़िश की है। इनके बयान झूठे हैं···'दे आर लायर्स··· हिपोक्रेट···मर्सीलेस'।

(प्रकाश बुझता है, फिर सामने उभरता है। आमने-सामने से युवती और युवक आते है।)

युवक : अब हम आमने-सामने बात नहीं कर सकते।

युवती : लो, पीठ फेर लो।

(दोनों पीठ फेर लेते हैं।)

युवक : मुझे अफसोस है, तू औरत है।

युवती : मुझे सख्त अफसोस है, तू मर्द है···और उससे भी ज्यादा अफसोस, तू मेरा धर्मपति है !

युवक : हमारी शादी हो गई ?

युवती : देखते नहीं, हम 'डाइवोर्स' की तैयारी कर रहे हैं।

युवक : बेशर्म···जानवर···!

युवती : मैं मां बनने वाली हूं।

युवक : उसी जानवर से ! 'आई हेट यू'।

युवती : हाय, 'आई लव यू'। (सामने आ जाती है।) अब तेरे भीतर वह गांव वाला आदमी आ गया। 'हाऊ नाइस'।

युवक : (छुड़ाता है) 'नानसेन्स' !

युवती : हाय, तो ऐसा क्या हो गया मेरे प्राणपति···धर्मपति, वगैरह-वगैरह।

युवक : कुछ हुआ ही नहीं ?

युवती : तुम्हारी शादी हो गई।

युवक : मेरी नहीं, सिर्फ तुम्हारी···और उसी जानवर से !

युवती : मगर मेरे धर्मपति तुम हो !

युवक : इसकी जरूरत मुझे नहीं।

युवती : तुम्हारे डैडी को है। उसे मुकदमे से छूटना है।

युवक : और तुझे ?

युवती : मुझे फ्लर्ट करना है अपने ससुर की दौलत से, तुम्हारी धर्म-पत्नी बनकर।

युवक : मैं जज के सामने सब साफ-साफ कह दूंगा।

युवती : नहीं कह सकते। 'यू आर ए कावर्ड'।

युवक : तू जलील है !

युवती : तभी यह सुंदर जोड़ी है—एक अंधा एक कोढ़ी है।

(हंसती है।)

युवक : बेशर्म, तुझ पर कोई असर नहीं ?

युवती : क्या फर्क पड़ता है, डियर। दुनिया हमें बेवकूफ बनाती है, हम उसे बेवकूफ बनाएं—इसी का नाम नया अब्दुल्ला है।

युवक : अब्दुल्ला मारा गया।

युवती : नया अब्दुल्ला पैदा हुआ। हम कोर्ट में इसे साबित कर देंगे, कत्ल का मुकदमा खत्म।

युवक : मुझ पर तेरी वजह से 'पब्लिक न्यूसेंस' का भी 'चार्ज' है।

युवती : मैं तुझे बेदाग छुड़ा लूंगी।

युवक : अदालत को जैसे ही पता चला, तू उसी जज की लड़की है, मुकदमा उसके इजलास से दूसरे इजलास भेज दिया जाएगा।

युवती : मैं उस जज की लड़की नहीं।

युवक : फिर तू क्या है ? किसकी लड़की है ? कौन है तू ?

युवती : आओ, एल० एस० डी० खा लें···वरना सच्चाई हमें पागल कर देगी। न जाने क्यों, मैं तुझसे एक क्षण के लिए ईमानदार होना चाहती हूं।

(विराम)

युवक : (सहसा) आओ, एल० एस० डी० खा लें।

युवती : जज की लड़की बनकर तेरे डैडी को बेवकूफ बनाया। मगर तुझे नहीं।

युवक : मुझसे शादी क्यों की !

युवती : 'इल्लाजिकल कनक्लूजन आफ लाजिकल फ्राड।'

(दोनों हंसते हैं।)

युवक : आज एल० एस० डी० खाए बिना उसका नशा हो रहा है।

युवती : पूरे होशोहवास में तुम्हारा डैडी पागल होता है, हम पर यह असर डालने के लिए कि वह जानवर नहीं है।

युवक : इत्ती-सी बात के लिए वह इतनी बड़ी मेहनत क्यों करेगा ? इसके और भी कितने मकसद होंगे उसके दिमाग में।

युवती : डैडी महान हैं।

युवक : तू उसकी नानी है !

युवती : लो, पैर छुओ।

युवक : (दोनों हाथ हवा में हिलाने लगता है।) मेरी उंगलियों से फूल झड़ रहे हैं···नहीं, नहीं, कीड़े गिर रहे हैं।

युवती : बिना एल० एस० डी० खाए ?

युवक : काला···पीला···नीला···सफेद···बैंगनी···

युवती : (उछलने लगती है) पहाड़···नदियां···जंगल···हाथी ···घोड़े···सांप।

युवक : अरे बिना एल० एस० डी० खाए ?

युवती : शीऽऽ, वे आ रहे हैं।

(दौड़ते हुए डाइरेक्टर और स्त्री का प्रवेश)

डाइरेक्टर : वह कहां है ?

युवक : वह कौन ?

स्त्री : वह इधर ही भागे आए हैं !

युवती : कौन ? क्या ?

डाइरेक्टर : वही,···पागलखाने से भाग आए हैं।

(भीतर दौड़ता है।)

स्त्री : उनका दिल और दिमाग पहले से ही घायल था···तुम्हारी वजह से।

युवती : ओह ! दिल और दिमाग ?

(हंसती है।)

स्त्री : और ऊपर से एक हादसा और हो गया—एक जगह गीता प्रवचन देते-देते उनके मुंह से निकल गया—'हमारे हाथों अब्दुल्ला की हत्या हुई है।' हमारे वकील ने सलाह दी, इन्हें पागलखाने में कुछ वक्त के लिए भरती कर दिया जाय, वरना हम सबको फांसी होगी।

युवती : 'फैन्टास्टिक'।

स्त्री : उनकी सारी तकरीर सारे अखबारों में छप गई।

युवती : अखबारों में उनकी 'बायोग्राफी' छप रही है।

(शोर होता है। पुरुष कमर में बंधी रस्सी तुड़ाए भागा आता है। डाइरेक्टर उसे संभाल रहा है। पुरुष खड़ा होकर निःशब्द जैसे गीता प्रवचन देने लगता है।)

डाइरेक्टर : डाक्टर बुलाओ, डाक्टर।

स्त्री : डाक्टर···डाक्टर !

युवक : जानवरों के डाक्टर !

युवती : एनिमल हसबैण्ड्री।

(युवक और युवती दायें-बायें जैसे फोन मिलाते हैं।)

युवक : हेलो डाक्टर साहब···फौरन आइए···जी हां, जी (पूछता है) डाक्टर पूछ रहे हैं, बीमारी क्या है ?

युवती : हेलो···हेलो···डाक्टर···जी···पूछती हूं। (पूछती है) बीमारी क्या बताऊं ?

डाइरेक्टर : भाई साहब, बीमारी क्या बताई जाए ?

सभी : बीमारी का नाम ?

पुरुष : 'एनिमल फैटिपाथारसिस'।

युवक : हेलो डाक्टर···'एनिमल फैटिपाथारसिस···

युवती : 'एनिमल फैटिपाथारसिस'।

(पुरुष जैसे माइक पर निःशब्द धारा-प्रवाह बोल रहा है।)

डाइरेक्टर : इसी तरह गीता प्रवचन देने की आदत है।

स्त्री : इसी तरह लेक्चर देने की प्रैक्टिस किया करते थे।

डाइरेक्टर : रस्सी से खींचकर इन्हें अंदर ले चलना चाहिए।

युवती : 'इन्टरेस्टिंग···फनी···कम···आन'···

(डाइरेक्टर, स्त्री, युवती और युवक थामकर उसे भीतर खींच रहे हैं।)

डाइरेक्टर : जोर लगाकर हइया···। दम लगाकर हइया। जोर लगाकर हइया···दम लगाकर हइया। वीर बहादुर हइया···जय

जवान हइया। जै जै हिन्द भइया। जय जवान हइया··· जै किसान हइया···'किचन गार्डन' हइया···लूप लगाओ हइया···गरीबी हटाओ हइया···समाजवाद लाओ हइया ···जोर लगाकर···

(सब उसे अंदर खींच ले जाते हैं। बाहर से दौड़ा हुआ पुलिस अफसर आता है।)

पुलिस : सावधान ! लेफ्ट राइट लेफ्ट ! लेफ्ट राइट लेफ्ट। पीछे घूम···तेज चल ! लेफ्ट राइट लेफ्ट···।

(चल रहा है। भीतर से दौड़ती हुई स्त्री निकलती है। डाइरेक्टर उसका रास्ता रोकता है।)

पुलिस : मुल्जिम अन्दर है ?

डाइरेक्टर : जी हां।

पुलिस : कॅट्रोल रूम से खबर मिली है कि मुल्जिम पागलखाने से फरार हो गया।

डाइरेक्टर : जी नहीं, हाजिर है घर में।

पुलिस : जै हिन्द। लेफ्ट राइट···लेफ्ट राइट लेफ्ट !

स्त्री : कज़िन ब्रदर। रुक जा !

पुलिस : रुक जा।

(सेल्यूट मारकर खड़ा है।)

स्त्री : उस झूठे दगाबाज ने कहा, 'अब संसार की सारी स्त्रियां मेरे लिए मां-बेटी की तरह हैं।'

डाइरेक्टर : इसमें बुरी बात क्या है, समझाइए इन्हें, साले साहब !

स्त्री : अपना उल्लू सीधा कर मुझे अब अपने रास्ते से हटा देना चाहता है।

डाइरेक्टर : नहीं। बात यह है कि वह अब धर्म की जिन्दगी शुरू करना चाहते हैं।

स्त्री : झूठ ! मैं सब भंडाफोड़ कर दूंगी।

डाइरेक्टर : इन्हें समझाइए साले साहब।

स्त्री : अभी मुकदमा खारिज नहीं हुआ है।

डाइरेक्टर : जज हमारा समधी हो चुका है।

स्त्री : मैं अभी सीधे जज के पास जाती हूं।

पुलिस : वहां क्यों जाओगी ? आओ मेरे साथ···।

(उसे लिए हुए एक ओर)

पुलिस : किस्सा मारा अब तक ?

स्त्री : तुझसे मतलब !

पुलिस : 'काज़िन सिस्टर', अब ऐसे बोलोगी ?

स्त्री : वह कहता है, 'मैं सब कुछ अपने बेटे-बहू के नाम लिखकर संन्यास ले लूंगा।'

पुलिस : अरे, अभी तो मुकदमा चल रहा है।

स्त्री : उसके लिए क्या है, वह कुछ भी कर सकता है।

पुलिस : तू भी तो सब कुछ कर सकती है···आ, मैं तुझे रास्ता बताऊं, हां।

स्त्री : हाय, छोड़ मेरा हाथ। मैं उसकी धर्मपत्नी हूं।

पुलिस : मैं भी तो तेरा धर्म-कज़िन हूं।

डाइरेक्टर : शीऽऽ, लोग आ रहे हैं।

(पुलिस जाता है।)

स्त्री : कौन हैं ?

डाइरेक्टर : लगता है, भाई साहब ने प्रेस कान्फ्रेंस बुलाई है। अखबार वाले आ रहे हैं। भाभी साहब, थोड़ा ड्रिंक पार्टी का इंतज़ाम···।

(स्त्री अन्दर जाती है।)

डाइरेक्टर : आइए···आइए···तशरीफ लाइए। (अदृश्य पत्रकारों का स्वागत) बैठिए इधर···बैठिए···इधर और जगह हैं। बहुत-बहुत शुक्रिया। जी हां, अंदर हैं। जी हां जी··। ऐसी इमरजेन्सी में प्रेस कान्फ्रेंस के लिए आप लोगों को तकलीफ दी। जी हां, पागलखाने में ही समझिए। अब बेहतर हैं। बिल्कुल नार्मल इन्सान भला आज कैसे हो सकता है···हां, करीब-करीब नार्मल।···वह देखिए, खुद

चलकर आ रहे हैं। हाथ में एक पुष्प लिए हैं। शाल ओढ़े हैं।

(पुरुष आता है। अदृश्य पत्रकारों से मिलना।)

पुरुष : थैंक्यू वैरी मच···बहुत-बहुत शुक्रिया···धन्यवाद।

डाइरेक्टर : यह पूछ रहे हैं, अब आपकी तबीयत कैसी है?

पुरुष : ईश्वर की कृपा···ठीक हूं। हरि ओम।

डाइरेक्टर : बीमारी?···मैं बताता हूं नाम···हिपोएनिमल फैंटिया-थारसिस'।

पुरुष : अजी, यह सब डाक्टरों के चोचले हैं···दरअसल मैं समाधि-मग्न हो गया था—'ट्रांसेंडेंटल···यू नो।'

डाइरेक्टर : यह पूछते हैं, आपने अब्दुल्ला के कत्ल की बात अपने लेक्चर में कबूल कर ली थी···

पुरुष : वह तो मैं जीवन-दर्शन की बात समझाते-समझाते '···यू नो'।

डाइरेक्टर : यह पूछते हैं, इधर आपने क्या महसूस किया है?

पुरुष : मनुष्य ने इधर बहुत कमाया है। गरीबी दूर की है।··· बेहद तरक्की की है। मैं किसी से पीछे नहीं हूं—मालिक वही परमात्मा है। लेकिन एक चीज़ मनुष्य ने इधर खोई है—यह भाव, यह 'फीलिंग' कि इस संसार का कोई बनाने वाला भी है। मतलब यह है कि 'यू नो'। (हंसता है।)

डाइरेक्टर : यह पूछ रहे हैं, आप पर दो संगीन मुकदमे चल रहे हैं—एक कत्ल का, एक 'पब्लिक न्यूसेंस' का। आपकी एकाएक बीमारी की यह वजह तो नहीं?

पुरुष : (हंसता है।) देखिए, बुरा मत मानिए, मैं इधर ऐसे ही हंसने लगा हूं।···हां तो···मैं क्या कह रहा था? हां, समाधि में एक दिन अर्जुन से मुलाकात हो गई···वह चाय पी रहे थे। साथ में द्रौपदी भी थीं। उन्होंने मुझसे पूछा, 'कहो भाई, क्या हाल-चाल हैं पृथ्वी के?' मैंने कहा, 'ज़मीन पर लोग बहुत व्यस्त हैं।' द्रौपदी बोली, 'कोई हमें

भी याद करता है?' मैंने कहा, 'क्यों नहीं—बूढ़ी औरतें याद करती हैं।' तभी उधर से कृष्ण गुजरे—टहलने जा थे। मुझे 'विश' करते हुए बोले, 'मुझे खुशी है, तुम्हें गीता की इतनी समझ है।' तभी रुक्मिणी हंसती हुई आई, पूछा, 'औरतों का उधर 'लेटेस्ट फैशन' क्या है?'

डाइरेक्टर : यह पूछ रहे हैं—क्या यह सच है, जज की लड़की से आपके लड़के की शादी हो गई?

पुरुष : जी, हां, रुक्मिणी ने भी यही सवाल किया। वह बहुत खुश हुई यह जानकर कि पृथ्वी पर अब लोग बिना किसी लड़ाई-झगड़े के शादियां करते हैं। इस पर राधा जी बहुत मुस्कराईं। हें···हें···हें···हें···। आह, कितना आनन्द आया उनके साथ चाय पीकर।

डाइरेक्टर : यह पूछते हैं—आप 'मेडिकल चेक अप' के लिए स्विटज़रलैंड कब जा रहे हैं?

पुरुष : जाहिर है मुकदमे से छूटते ही।

डाइरेक्टर : यह कह रहे हैं—आपको यकीन है—मुकदमे में आप जीत जाएंगे?

पुरुष : यह मुझसे कुइन विक्टोरिया ने भी पूछा, जी हां। मैंने जवाब दिया—सत्यमेव जयते।

डाइरेक्टर : आपका राजनीतिक विश्वास क्या है—यह पूछ रहे हैं।

पुरुष : कार्ल मार्क्स से मुलाकात होते ही उन्होंने भी यही पूछा··· 'ह्वातिज़ योर पोलितकल फेथ?' मैंने कहा, 'बुरजुआ सोशलिज़्म।' इस पर लेनिन को हंसी आ गई। मैंने कहा, 'हंसिए नहीं। हम गरीबी हटाने में जी-जान से लगे हैं।' मार्क्स ने खांसते हुए कहा—'बिना क्रांति के गरीबी नहीं हटाई जा सकती।' मैंने बताया, 'हम वहां 'हरी क्रान्ति' कर रहे हैं, किचन गार्डन···लूप···।' इस पर वह दंग रह गए। फिर बात चली 'फंडामेंटल राइट' की···'पर्सनल प्रापर्टी' की, 'अरबन सीलिंग' की। मैंने बताया—हमें

इसकी कोई चिन्ता नहीं, क्योंकि हम निष्काम कर्म पर विश्वास करते हैं—निष्काम संवाद, गरुड़-काकभुशुंडि संवाद, शंकर-पारवती संवाद, अर्जुन-कृष्ण संवाद, राम-जानकी संवाद, लक्ष्मण-परशुराम संवाद, तोता-मैना संवाद, लोक-सभा संवाद···पार्टी संवाद, पन्द्रह अगस्त संवाद···राष्ट्र के नाम संदेश संवाद···'

डाइरेक्टर : बैठिए···बैठिए। अभी जाइए नहीं। जल्दी क्या है ?

पुरुष : भाई, काकटेल का इन्तज़ाम है। कुछ खा-पीकर जाइए। मुझे अपनी बात तो पूरी कर लेने दीजिए। जो प्रेस वक्तव्य देने के लिए आप दोनों को तकलीफ दी, वह तो अभी कह नहीं सका। सुनिए-सुनिए···कुछ बयान करते रहना ही मेरी ज़िन्दगी है। और यह ज़िन्दगी किसने बनाई ? यह सारा माहौल आज़ादी के बाद क्यों इस तरह बदल गया ? यही सवाल मैंने लेनिन और कार्ल मार्क्स से पूछा। उन्होंने वही 'डाइलेकटिक्स' का राग अलापा। मैंने कहा, 'जी नहीं, हमारे यहां डाइलेक्टिस-फाइलेक्टिस कुछ नहीं चलती ···वी डोन्ट हैव इएल्टी, वी हैव ट्रंकुएल्टी।

(प्रकाश बुझ कर फिर उसी अदालत के दृश्य पर उभरता है। बेतरह कुत्ते भौंक रहे हैं। एक कुत्ते का पीछा करते हुए चपरासी आता है और उसे लोगों के बीच में खदेड़ता हुआ बाहर निकल जाता है। एकाएक मजिस्ट्रेट जगता है।)

जज : क्या मैं सो गया था ? जी नहीं। (उठकर अंगड़ाइयां लेता है। हाथ तान कर पैर छूता है कई बार) इस मुल्क की आबोहवा ही ऐसी है। चपरासी !···चपरासी !···

चपरासी : जी, हुजूर।

जज : यार, कुत्तों को चुप कराओ। ये लो, ड्रार में अभी गोलियां हैं।···जाओ, खिला दो।

(चपरासी जाता है। थोड़ी देर बाद कुत्तों का भौंकना समाप्त हो जाता है।)

जज : तो डाइरेक्टर साहब, कतल का इल्ज़ाम आप पर झूठा लगाया गया।

डाइरेक्टर : बिल्कुल बेबुनियाद।

जज : डाइरेक्टर साहब, आप इससे पहले क्या काम करते थे ?

डाइरेक्टर : 'कालोनाइज़र' था।

जज : और अपने नाम से सरकार की ज़मीनें बेचीं। शाबाश! इसके बाद फाइनेंस कम्पनी खोली···क्यों ?

पुरुष : जी हां, मगर मेरा इनसे कोई ताल्लुक नहीं।

जज : इसमें ताल्लुक की क्या ज़रूरत ?···तो फाइनेंस कम्पनी का दीवाला निकालकर एकाध मन्दिर-मस्जिद बनवाया होगा।

वकील : हुजूर, इनका केस बिल्कुल अलग है।

डाइरेक्टर : मेरी फाइनेंस कम्पनी अब तक है।

जज : मन्दिर के शिलान्यास-उद्घाटन के लिए कोई मंत्री-वंत्री मिला ?

पुरुष : वकील साहब, सुनिए···तारीख दलवा दीजिए। पेशकार को फीस दे दीजिए। इस जज को मैं देख लूंगा। यह क्या समझता है अपने-आपको ?

जज : फिर आपने इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का धन्धा शुरू किया ?

पुलिस : साथ ही एक प्रेस खोला। लाइसेंस छाप-छाप कर अफसर के जाली दस्तखत कर इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट लाइसेंस बेचे। गिरफ्तार हुए। सज़ा काटी।

जज : अजी, भूल-चूक किससे नहीं होती। मगर ऐसा क्यों करते हैं—चलिए, एक बार सच ही बोल दीजिए।

डाइरेक्टर : बात यह है साहब,अब दुनिया में सिर्फ दो ही चीजें रह गई हैं—पैसा और बंदा।

जज : भई, सुना गया है—कोई खुदा-वुदा भी होता था।

चपरासी : हुजूर, वह चूतियों के लिए···माफ कीजिएगा, मुंह से निकल गया।

जज : आर्डर···आर्डर···। यार, इस लौंडे का चेहरा किधर है ? इधर आओ···पुलिस, इसके बाल कटाओ।

युवक : 'दिस इज़ माई राइट'।

जज : और तुम्हारा 'लेफ्ट' किधर है ?

पुलिस : चलो, बाल कटाओ।

युवक : मैं सिर कटा सकता हूं, मगर यह बाल नहीं।

जज : अच्छा जी···(बढ़कर उसके सिर का 'विग' खींच लेता लेता है) अरे, वाह प्यारे। बदली से निकला है चांद, ओ मेरे सजना, बदली से निकला है चांद।

(विग अपने सिर पर लगा लेता है।)

कैसा लग रहा हूं ?

(सब तारीफ करते हैं।)

चपरासी : अजी यह जज है कि भांड़। यही नौटंकी करके मुल्ज़िमों को फांसता है। मुझे यह बात बतानी नहीं चाहिए···मगर आदत से मजबूर हूं। हां जी, किसको पुकारूं ?

जज : इसकी बीवी को।

चपरासी : कमाल है, अब इसकी नज़र बीवियों पर है। (पुकार) इसकी बीवी हाज़िर है !

(स्त्री का प्रवेश)

स्त्री : ये सारे हत्यारे हैं···इन्हें फांसी पर चढ़ा दो।

जज : अरे रे रे···आपको कुछ 'सेंट-वेंट' लगाकर आना चाहिए। यह बात क्या है ?

पुरुष : हरि ओम।

डाइरेक्टर : बड़ी उमस है।

युवक : नानसेंस।

जज : आराम से सांस लीजिए। सोचिए, इन्हें फांसी देने से आप विधवा नहीं हो जाएंगी ?

स्त्री : ऐसे हरामजादों से विधवा होना ही बेहतर है।

पुरुष : हरि ओम।

जज : यह हंसने का 'प्वाइंट' है, हंसिए।

(डाइरेक्टर हंसता है।)

स्त्री : यह क्या हंसेंगे। इनकी नानी जो मर गई है।

चपरासी : जब दो होशियार एक-दूसरे से टकरा जाते हैं, तो यही होता है। उधर देखिए, उधर।

(सोते हुए सरकारी वकील को पुलिस खोदता है। वह हड़बड़ाकर उठता है।)

स० वकील : 'थैंक्यू वेरी मच'।

पुलिस : 'हाऊ डू यू डू'।

स० वकील : हां, तो बताइए, आपकी बीवी आपके खिलाफ क्यों है ?

पुरुष : मेरी मुलाकात एक दिन महात्मा गांधी से हो गई। वह स्वर्ग में तेरह दिनों का उपवास व्रत लिए बैठे थे। मैंने पूछा, 'वजह ?' भूलाभाई देसाई ने बताया—'लोग संध्या प्रार्थना सभा में न आकर अप्सराओं का नृत्य देखने जाते हैं।'

स्त्री : झूठा···फरेबी।

जज : हां हां···हां, कहने दीजिए···फिर क्या हुआ ?

डाइरेक्टर : भाई साहब, बन्द कीजिए, इसकी बदमाशी नहीं जानते।

जज : फिर क्या हुआ, यार ?

वकील : खामोश।

पुरुष : फिर उधार 'लाइट आफ' हो गई। और इधर मेरी समाधि टूट गई।

जज : यार, अच्छी चीज चल रही थी। खैर, अगला सवाल कीजिए।

स० वकील : अब्दुल्ला के कत्ल में इन्होंने जिस हथियार का इस्तेमाल किया उसकी धार काफी तेज थी। कत्ल करने से पहले उसे खूब शराब पिलाई गई। उसे 'ओवर ईटिंग' कराई गई।

फिर नींद की गोलियां खिलाई गईं। उसे 'एअरकंडीशण्ड' कमरे में सुलाया गया।

चपरासी : राम-राम-राम। मैं एक बार ट्रेन में बैठा अपने गांव जा रहा था। एक मुसाफिर दूसरे को लगा मारने। उसके बच्चे पें-पें करने लगे। औरत गुहार मचाने लगी···बचाओ ···बचाओ। मैं मुंह ढांक कर सो गया। वह लूटमार कर जब भाग गया, फिर मैं जागा। कौन पड़ता उस पचड़े में ···मुझे अपने गांव जाना था। सोचिए, कौन उस झंझट में फंसता !

पुलिस : चुप रह। बीच में खामखा चबड़-चबड़ करता है।

जज : तो अब्दुल्ला को खूब खिला-पिलाकर मारा आप लोगों ने।

पुरुष : हुजूर, खामखा हमपर शक किया जा रहा है। मैं धर्म की जिन्दगी जीने वाला एक शरीफ इन्सान···।

जज : कत्ल का शक तुम्हीं पर क्यों किया गया ?

पुरुष : लोग जलते हैं मेरी दौलत से। मेरी इज्जत से। मेरे नाम से, रुतबे से। हर एलेक्शन में हर एक पार्टी हमसे रुपये लेती है। हमारी गाड़ियां दौड़ाई जाती हैं। और आखिर में हमपर ही शक किया जाता है।

जज : आखिर इत्ता सब कमाया कैसे ?

पुरुष : एक जम्हाई लेता है, तो दूसरे को जम्हाई आती है कि नहीं। यह कुदरत का उसूल है।

जज : आर्डर···आर्डर···यहां जम्हाई मत लीजिए। कहां है इसकी धर्मपत्नी ?···

वकील : हाजिर है।

चपरासी : (पुकारता है।) हाजिर है इसकी धर्मपत्नी।

(युवती का प्रवेश)

युवती : हाय, डैडी !

जज : वह किसे डैडी कह रही है ? भई, मैं तो कुंवारा हूं।

युवती : 'डोंट बी सिली डैड'।

जज : भई, यहां कोई डैड-फैड, मदर नहीं। आप एल० एस० डी० वगैरह तो नहीं खा आई हैं ?

युवती : अरे···तुम्हारा विग ?···

जज : अब्दुल्ला को देखा है ?

युवती : ह्वाट अब्दुल्ला ?

युवक : नानसेंस !

स० वकील : बयान दीजिए। अपनी सफ़ाई में क्या कहना है ?

पुरुष : बोलो सुनी।

युवक : गर्लफ्रेन्ड्स··· होटल··· बिस्तर ··· सिगरेट··· ड्रिंक्स··· फिल्म्स···सेक्स··· डाक्टर···दीवारें ···दवाइयां ···डैडी ···कज़िन···। आंट्स··· नीस···जोक्स··· डाईवर्जन··· हेरी कृष्णा···हेरी रामा।

युवती : फ्रीडम···फैशन···माडर्न··· रिवोल्यूशन··· एल० एस० डी०···मरजुआना···हेंगओवर—हेरी कृष्णा हेरी रामा।

जज : आर्डर-आर्डर···। यार थोड़ा अपनी ज़बान में भी बोला करो ताकि 'सेंस आफ ह्यूमर' तो बना रहे।

स० वकील : मी लार्ड, ये सब कातिल हैं। अब्दुल्ला में किस कदर 'सेंस आफ ह्यूमर' था।

पुरुष : इस ब्रह्माण्ड में कभी कुछ नहीं मरता।

जज : आपका 'ओरिजनल' नाम क्या है ?

पुरुष : कमाल है, यह कैसा सवाल ? (खांसने लता है।) एक बार मुझे ऐसा सिरदर्द हुआ···ऐसा कि मैं अपना नाम ही भूल गया।

जज : खैर···। चपरासी, वह बाक्स यहां उलट दो।

(चपरासी कागजों से भरा बाक्स उलट देता है।)

जज : यह देखिए···आप लोगों के लिए इतनी सिफारिशें आई हैं। मिनिस्टर आफ फारेस्ट, मिनिस्टर···हेल्थ एण्ड हाइजीन···चीफ सेक्रेटरी···डाइरेक्टर एनिमल हसबेंड्री ···जनरल मैनेजर, पेस्टीसाइड (यह मेरे साढ़ू साहब हैं), ···चेयरमैन, महिला मनोरंजन क्लब (यह कौन है ?

ओह, यह मेरी भाभी की ननद की जेठानी है)···प्रेसिडेंट, होमगार्ड (यह वही हैं न···हां हां, वही हैं, याद आया··· वही) और इसी तरह न जाने कितनी हैं। भई, इसमें से किसी एक की ही सिफारिश काफी नहीं थी ?

पुरुष : मुझे कुछ नहीं पता। सब उसी की माया है।

जज : अब मेरी समस्या यह है कि इनमें से किसकी सिफारिश मानूं। चलिए···इसकी लाटरी निकाली जाए।

(कागजों की गोलियां बनती हैं)

जज : आइए···इसमें से एक निकालिए (लोग बढ़ते हैं, जज केवल स्त्री को इशारा करता है। स्त्री निकालती है।) हवा में उछाल दीजिए।

(स्त्री हवा में उछालती है। जज हवा में ही पकड़ लेता है।)

जज : अयं। मेरी धर्मपत्नी···

डाइरेक्टर : उनसे मेरी मुलाकात एक 'हेयर ड्रेसिंग सैलून' में हुई थी।

पुरुष : हें-हें-हें।

स्त्री : ये सब झूठे, दगाबाज, बेईमान हैं।

जज : नहीं, नहीं, गुस्सा करना ठीक नहीं। हाजमा खराब हो जाता है।

स्त्री : सुनिए, मैं सारी सच्चाई बयान करती हूं।

चपरासी : शाबाश, बहिन जी।

जज : आर्डर···आर्डर। यहां सच बोलने का कोई इनाम नहीं दिया जा सकता। वरना सच बोलने की एजेंसियां खुलने लगेंगी। फर्में बनने लगेंगी। सट्टे बाज़ार खुल जाएंगे।

स्त्री : हुजूर, सच्चाई बयान करने दीजिए। ये सारी शादियां क्यों और कैसे हुई ? मैं बताती हूं···। मैं बताती हूं···सुनिए··· सुनिए।···

(पुलिस, डाइरेक्टर और पुरुष जबरन स्त्री को बाहर खींच ले जाते हैं। पृष्ठभूमि में कुत्ते भौंकने लगते हैं। थोड़ी ही देर बाद पुलिस का प्रवेश।)

पुलिस : 'हैंड्स अप'। खबरदार ! कोई भी हिलने-डुलने की कोशिश न करे।

युवक : 'नानसेंस'।

युवती : हाय ! थ्रिलिंग।···

जज : यह क्या मज़ाक है ?

वकील : भई, मैं तो सिर्फ वकील हूं। मुझे और बातों से क्या मतलब ?

(भागता है।)

स० वकील : भला मुझे इन चक्करों से मतलब ? मेरा गला किस कदर सूखता जा रहा है।

(निकल जाता है।)

चपरासी : धत्तेरे की···मैं क्या जानूं।

(चंपत होता है।)

जज : मेरे पास ज़रा भी वक्त नहीं। मुझे फौरन 'जजमेन्ट' देना है।···अयं···क्या ?

पुलिस : चमड़े का नया पट्टा है। चलो बढ़ो। गले में बांधो। चलो, नीचे आओ···!

जज : क्या ?

पुलिस : चमड़े का पट्टा।

जज : मैं जज हूं···न्यायाधीश। 'फ्री एंड इनडिपेन्डेन्ट'।

पुलिस : हुक्म हुआ है, यह पट्टा तुम्हारे गले में बांधना होगा।

चपरासी : अरे रे···रे···यह क्या ?

जज : इस तरह 'जुडीशियरी' का मज़ाक नहीं कर सकते। हां नहीं तो···।

पुलिस : इसे पहनकर अब तुम्हें 'कमिटेड जज' होना है।

जज : होना है···होना है।

पुलिस : 'यू विल इन्टरप्रेट ला इन दी लाइट आफ दी आइडिआलोजी

आफ द रूलिंग पार्टी।'

जज : सीधी ज़बान से बात करो···।

पुलिस : 'डिसाइड केसेज एकार्डिंग टू दी विशेज़ आफ दी पोलिटिकिल पार्टी'···समझ गए या राष्ट्रभाषा में अनुवाद करूं ?

जज : देखो···देखो···न तुम मेरे साले, न मैं तुम्हारा साला··· फिर यह मज़ाक क्यों ?

पुलिस : सीधे से कहता हूं, पट्टा बंधवा लो, हां।

जज : अरे···रे···रे···क्या करते हो ?

पुलिस : सरकार का आर्डर है।

जज : मैं सरकार का नहीं, संविधान का हूं।

(पुलिस जज को पट्टा पहनाने के लिए खींचता है। जज भागता है।)

जज : यह क्या बदतमीज़ी है। तुम्हें मालूम है···ये सारे मुल्ज़िम कातिल हैं! ···

पुलिस : मैं कुछ नहीं सुनना चाहता।

जज : अब्दुल्ला का कत्ल हुआ है।

पुलिस : बन्द करो बकवास।

जज : मेम्बर्स आफ जूरी मुझसे सहमत हैं।···अब्दुल्ला का कत्ल हुआ है।

पुलिस : गलत। अब्दुल्ला ज़िन्दा है।

(दोनों की नज़रें मिल जाती हैं।)

जज : अगर वह ज़िन्दा है तो हाज़िर किया जाए।

पुलिस : तुम्हें यही जजमेंट देना है—अब्दुल्ला ज़िन्दा है।

जज : कहां है अब्दुल्ला ?

पुलिस : पहनो यह पट्टा···अब्दुल्ला दिखाई पड़ जाएगा।

जज : अब्दुल्ला अकेला नहीं है। वह सबके बीच में है। वह जो करता है, उसके लिए वही ज़िम्मेदार है···मगर कुछ भी करने, न करने का असर उसके चारों ओर पड़ता है। आखिर उसे किसीने जन्म दिया, खिलाया, पिलाया, कपड़े

पहनाए···उसकी हिफाज़त हुई। बताओ, ये कपड़े किसने सिले ? यह मकान किसने बनाया ? हम लोग यहां पैदल तो नहीं आए ? हमने पेट भर लिया। पर वह खाना कहां से आया ? यह आज़ादी कहां से आई। यह एल० एस० डी० है क्या ?

पुलिस : इसे पहनना है कि नहीं ?

जज : इनके बयान हैं···सारे सबूत हैं···मनुष्य अर्थ का दास है··· मनुष्य आज़ादी का गुलाम है। मगर वह अर्थ किसका दास है ? वह आज़ादी किसकी है ? उससे कोठियां खड़ी कीं··· कपड़े सिलवाए···डाके डलवाए···शादियां कराईं, तरह-तरह-तरह की भाषाएं बुलवायीं, दस्तखत कराए, सुलाया-जगाया और उसे उल्टे हवा में टांग दिया। सुनो···अब्दुल्ला की हत्या मैंने भी की। चलो मेरा ट्रायल करो···चलो··· मैं खुदा को हाज़िर-नाज़िर समझकर कबूल करता हूं··· यह मैं हूं बल्द···साकिन···सुनो किस्सा उस जानवर का। क्या नाम था उसका ? हां, डायनोसार···डायनोसार··· वह अपनी···हां, सिर्फ अपनी, जानवरों वाली अपनी ताकत और आज़ादी के लिए अपना शरीर बढ़ाता गया···बढ़ाता गया···कहां मुंह···कहां पूंछ, मीलों लम्बा-चौड़ा डायनोसार बढ़ते-बढ़ते इतना बढ़ा कि वह चलने-फिरने से मजबूर हो गया। और वे डायनोसार्स अपने ही बोझ से खुद ज़मीन के भीतर धंस गए। ज़मीन से असंख्य डायनोसार, अब उनकी चर्बी, पेट्रोल बनकर बाहर निकल रही है। 'दिस इज़ नेचर···दिस इज़ डायनोसार···डायनोसार।

(जज जैसे डायनोसार होकर ज़मीन में धंसने लगता है। पुलिस आकर उसके गले में पटा पहना देता है।)

पुलिस : शपथ ग्रहण करो, मिस्टर कमिटेड जज। बोलो, 'आई स्वेर दैट आई विल नाट बियर ट्रू फेथ एंड एलीजियन्स टू द कांस्टीच्यूशन एण्ड द ला।'

(जज दुहराता है।)

पुलिस : चलो, फैसला दो।

जज : हाज़रीन···मेम्बर्स आफ जूरी। नया अब्दुल्ला हाज़िर है। देखिए, उसका पहनावा, उसकी भाषा, उसकी आदतें, शौक और उसके कारनामे।···मगर यह आया कहां से? लाहौर से या दिल्ली से? इंगलैंड से या कलकत्ता से? यह हमारी आज़ादी की सन्तान है या पी० एल० फोर्टी की? अमेरिका में कोई छींकता है तो उसे यहां जुकाम हो जाता है। रूस में खांसता है कोई तो उसका ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है। मेम्बर्स आफ जूरी, हाज़रीन, गरीब गुलाम प्रजातन्त्र में, चाहे वह पूंजीवाद हो, चाहे समाजवाद, लोग भोजन, वस्त्र, व्यवहार, घर-परिवार, प्रेम, विवाह, भाषा, हाईजीन, कुलिंग, शेविंग, आर्ट एण्ड क्राफ्ट के बारे में लापरवाह हो जाते हैं। प्यार और विश्वास के बगैर ज़िन्दगी जीने की आदत डालने लगते हैं।···सुनो···इन्ही बातों से अब्दुल्ला दीवाना हुआ। पता नही, इतनी शादियों से उसका जी क्यों नहीं ऊबता? मैंने उसे जब पहली बार देखा था, वह सादे कपड़े पहनता, फिर वह एकाएक रंग-बिरंगे कपड़े पहनते मिला। मुझे ताज्जुब उस दिन हुआ, जब उसे सात रंगों की पैंट पहने देखा। वह न जाने किस भाषा में बड़बड़ा रहा था। मैंने उसे डांटा—ऐ! ऐसे सड़क पर खुले आम पेशाब करता है? वह बेशरम नंगा होकर हंसने लगा और पड़ोसी, मेरी लड़की, मेरी बीवी और मेरे बारे में अनाप-शनाप बकने लगा।

पिछले दिनों वह मुझे एक तंग अंधेरी जगह में छुपा हुआ मिला। उसके सारे बदन पर घाव थे, जिनपर कीड़े-मकोड़े रेंग रहे थे। वह एक पागल कुत्ते को पकड़े हुए बैठा था और उसका मुंह चूम रहा था। मैंने पूछा—क्यों? क्यों? क्यों? वह चिल्लाया—'जब चारों ओर इतना अंधेरा है, फिर यह बत्तमीज़ सूरज इतनी रोशनी क्यों फेंकता है! वह मर गया···वह ज़िन्दा है। उसने आत्म-हत्या की···वह मौजूद है। उसने गरीबी दूर की। वह बेहद गरीब है। वह प्रजातंत्र में है, पर बेहद गुलाम है। वह कपड़ों से लदा है, मगर नंगा है। वह भूखा-प्यासा है, खाता-पीता है। वह जो नहीं है, वही दीखता है। वह जो है, उससे हर वक्त भागता है—शून्य में और···हवा में और···सुरंगों में और···नशे में और···अंधेरे में और··· और···और···और···और···

(जैसे किसी सूली पर लटक जाता है, बाहर से दौड़ी हुई स्त्री आती है।)

स्त्री : उस भयानक रेगिस्तान को पार करना जहां सिर्फ प्यास हो, पानी न हो, वहां पानी का भ्रम भी कितना पागल बना देता है। इसीलिए हम प्यासे भी हैं और पागल भी।

पुरुष : हम किस आज़ादी की संतान हैं? बोलो, यह कैसी कौन-सी आज़ादी है?

युवती : वह जो सन् सैंतालिस में आयी? या वह जो काले ने गोरे से पायी?

डाइरेक्टर : हां-हां, जिसने नये राजाओं को जन्म दिया वही आज़ादी।

स० वकील : जिसने इंसानों की जगह वोटरों को पैदा किया, वही मत देने की आज़ादी।

वकील : हां, हां, जिसने इंसानों की जगह वोटरों को पैदा किया, वही मत देने की आज़ादी।

युवक : भूखे और बेकार रहकर सिर्फ रोज़ी-रोटी की बात करने की आज़ादी।

चपरासी : इसी आज़ादी के गर्भ से पैदा हुआ नया तंत्र जहां नहीं चलता आम आदमी का मंत्र।

(मंच पर आ आकर पहले दर्शकों से कहना, फिर वही दुहराते हुए जज की कुर्सी के चारों ओर घूमते रहना। धीरे-धीरे प्रकाश बुझता है।)

॥ पर्दा ॥

□□

[illegible]